॥ श्री ॥

तत्वबोधक कल्याण शतक

श्री चतुर्विध संघने भणवा योग्य जाणीने

आ पुस्तक प्रसिद्ध करावी

प्रसिद्ध कर्ता

श्री तपगच्छना गुलाबश्रीजी महाराजना शिष्य
हेमश्रीजी तेमना शिष्य कल्याणश्रीजीना
सदोपदेशथी आपुस्तक श्री चतुर्विध
संघने अमुल्य भेट

करवा माटे इन्दोरना श्राविकाए

श्री लक्ष्मी विलास स्टिम प्रेस इंदोरमां छपावी

विक्रम संवत १९७१ भादव सुदी ५ सोमवार

प्रथमवार १०००

अनुक्रमणीका.

व्ययकर्ता.

सुन्दरबाई, फुलीबाई, सोनीबाई, भुरीबाई, मिश्रीबाई मिस्ट्रेस, केसरबाई, गेंदीबाई, मोतीबाई. एमनी मददथी आ पुस्तक छपाव्री.

श्री.

॥ अथ ओगणत्रीस द्वार लिख्यते ॥

प्रथम नामद्वार । बीजूं लेश्या द्वार । त्रीजूं शरीर द्वार । चोथुं अवगाहना द्वार । पांच मुं संघयण द्वार । छट्ठु संज्ञाद्वार । सातमुं संस्थान द्वार । आठमुं कषाय द्वार । नवमुं इंद्रिय द्वार । दसमु समुद्घात द्वार । इगियारमु दृष्टि द्वार । बारमुं दर्शन द्वार । तेरमुं ज्ञान द्वार । चउदमुं योग द्वार । पनरमु उपयोग द्वार । सोलमुं उपजवानी संख्यानुं द्वार । सतरमुं चववानुं द्वार । अढारमुं आउखानुं द्वार । उगणीसमु पर्याप्ति द्वार । वीसमुं आहार द्वार । एकवीसमुं गतागति द्वार । बावीसमुं वेद द्वार त्रेवीसमुं भवन द्वार । चोवीसमुं प्राण द्वार । पचवीसमु संपदा द्वार । छवीसमुं

धर्म द्वार । सत्तावीसमुं जीव जोनी द्वार । अ-ठावीसमुं कुलकोटी द्वार । ओगणत्रीसमुं अल्प बहुत द्वार ॥

॥ हवे प्रथम नाम द्वार कहे छे ॥

प्रथम द्वार ॥१॥ हवे साते नरके थइ एक डंडक । ते नरकनां नाम । घमा १ वंसा २ शेला ३ अं-जण ४ रिठ्ठा ५ मघा ६ माघवती ७ ॥

॥ हवे भवनपतीनां दस दंडकनां नाम ॥

असुर कुमार १ नाग कुमार २ सुवर्ण कुमार ३ विद्योत कुमार ४ आग्नि कुमार ५ द्वीप कुमार ६ उदधि कुमार ७ दिसी कुमार ८ वायु कुमार ९ स्तनित कुमार १० पांच दंडक थावरनां ॥ ११ पृथ्वी१२ पानी १३ आग्नि १४ वायु१५ वनस्पती।१६ बेइंद्रि १७ तेइंद्री१८ चौरिन्द्रि १९ त्रीयंच पंचेन्द्रि २० मनुष्य २१ व्यंतर २२ यौतिषी २३ वैमानिक २४

॥ हवे त्रीजुं लेश्या द्वार कहे छे ॥

लेश्या ६ नां नाम । कृष्णलेश्या १ नीललेश्या २ कापोतलेश्या ३ तेजोलेश्या ४ पद्मलेश्या ५ शुक्ललेश्या ६ । नारकी तेउ, वाउ, बेइन्द्रि, तेइंद्रि, चौरिन्द्रि । ए ६ दडके प्रथम ३ लेश्या । त्रीयंचपंचेन्द्रियने । मनुष्यने ६ लेश्या । १० भवनपती व्यंतर, पृथ्वी, पानी, वनस्पती । ए चउ दंडके । प्रथम ४ लेश्या । यौतिषी । तथा सौधर्मी ईशान देवलोके । एक तेजो लेश्या । त्रीजें चोथें । पांचमे देव लोके । पदम लेश्या । छटा देव लोके थी उपरांत । सघले शुक्ल लेश्या ॥ २ ॥

॥ हवे चौथुं शरीर द्वार ॥

शरीर ५ नां नाम कहे छे । उदारीक शरीर १ वैक्रीय शरीर २ आहारक शरीर ३ तेजस शरीर ४ कार्मण शरीर ५ नारकी । दश भवनपती व्यंतर

योतिषी । वैमानीक । ए चउ दंडके त्रण्य शरीर । वैक्रीय तेजस ! कार्मण, पृथ्वी, पानी, अग्नि, वनस्पती, वेइंद्री, तेइंद्री, चउरिंद्री, । ए सात दंडके त्रण्य शरीर । उदारीक, तेजस कार्मण, वायु काय, तीर्यंच पंचेंद्री, ए बे दंडके । आहारक विनाचार शरीर । मनुष्यने पांच शरीर ॥ ३ ॥

॥ चोथुं अवगाहना द्वार कहे छे ॥

हवे समुच्चे नारकीनी । अव गाहना । जघन्य, आंगुलनो असंख्यातमो भाग । उत्कृष्टी पांचसे धनुषनी । प्रथम नरकें, जघन्य तीन हाथ, उत्कृटी पुणा आठ धनुषने ६ आंगुल । बीजी नरके जघन्य पुणा आठ धनुषने ६ आंगुल । उत्कृष्टी साढा पन्नर धनुषने बारा आंगुल । त्रीजी नरके जघन्य साढा पन्नर धनुष ने बारा आंगुल । उत्कृष्टी सवा एकत्रीस धनुषनी । चौथी नरके जघन्य सवा एकत्रीस धनुष । उत्कृष्टि साढी

बासठ धनुप। पांचमी नरके। जवन्य सार्दी बांसठ धनुपनी। उत्कृष्टी सावा सौ धनुपनी। छठी नरके। जघन्य सवा सौ धनुप। उत्कृष्टी अढीसे धनुप। सातमी नरके। जघन्य अढीसे धनुष। उत्कृष्टी पांचसे धनुपनी। दश भवनपती व्यंतर। योतीषी। ए बारा डडके जघन्य आंगु· लनो। असंख्यातमो भाग। उत्कृष्टी सात हाथ नी। वैमानीकमां जघन्य आंगुल नो असंख्यात मो भाग। उत्कृष्टी पहिले बीजे देव लोके। सात हाथनी। तीजे चोथे देवलोके ६ हाथनी। पांचमें छठे देवलोके पाच हाथनी। सातमें आठमें देवलोके चारहाथनी। नवमें दशमें अग्यारमें बारमेंदेवलोकें। तीन हाथनी देही। नवग्रवेयकें वे हाथनी देही। पांच अनुतर विमाने। एक हाथनी देही। ए तेर डंडके देवताना। उत्तर वैक्रीय करे तो लाख जो जननी देही। पृथ्वी, पानी, अग्नि, वायु, ए चार दंडके जघन्य। तथा उत्कृष्टी अवगाहना। आं·

गुलनो असंख्यातमो भाग । प्रत्येक वनस्पती कायनी । अवगाहना जघन्य आंगुलनो असंख्यातमो भाग । उत्कृष्टी अवगाहना हजार योजन से कांइंक अधिक । बेइंद्रीनी बारा योजननी । तेइंद्रीनी तीन कोसनी । चउरिंद्रीनी चार कोसनी । तीर्यंच पंचेंद्रीनी हजार योजननी । उत्तर वैक्रीय करेतो नवसो योजन । मनुष्य पंचेंद्रीनी तीन गउनी । उत्तर वैक्रीयकरेतो लाखयोजननी हेदी ॥४॥

॥ पांचमो संघयण द्वार कहे छे ॥

ते संघयणनां ६ नाम । वज्ररीषभनाराच संघयण । १ रीषभना राच संघयण । २ नाराच संघयण । ३ अर्धना राचसंघयण । ४ कीलकी संघयण । ५ छेवठु संघयण । ६ नारकी, दस भवनपती । व्यंतर, योतीषी, वैमानीक, पांच थावर । ए ओगणीश डंडके । असंघयणी, बेइंद्री, तेइंद्री, चउरींद्री, त्रीणडंडके, एक छेवठु संघयण ।

॥ आठमुं कषायद्वार कहे छे ॥

कषायना चार नाम क्रोध १, मान २, माया ३, लोभ ४, एचार कषाय चोवीस दंडके पामें ॥ ८ ॥

॥ नवमुं इंद्रीय द्वार कहे छे ॥

इंद्रीना पांच नाम । फरसेंद्री १, रसेंद्री २, घ्रा: णेंद्री ३, चक्षुइंद्री ४, श्रोतेंद्री ५ । नारकी दस भवन पती, व्यंतर, योतीषी, वैमानिक, तीर्यंच- पंचेंद्री, मनुष्य पंचेंद्री, एसोल डंडकें पांच इंद्री । पांच थावरने । एक फरसइंद्री, बेइंद्रीयेन, फरसइंद्री रसेंद्री, तेइंद्रीने, फरसेंद्री, रसेंद्री, घ्राणेंद्री, ए तीन होय । चोउरिंद्री ने । फरसेंद्री, रसेंद्री, घ्राणेंद्री, चक्षुइंद्री, ए ४ इंद्री होय ॥ ९ ॥

॥ दसमुं समुद्घात द्वार केह छे ॥

समुद्घात सातनानाम । वैदनीय समुद्घात१, कषाय समुद्घात २, मरणांतिक समुद्घात ३,

वैक्रीय समुद्घात ४, तेजस समुद्घात ५, आहारक समुद्घात ६, केवली समुद्घात ७ ॥ नारकीने। वायुने चार समुद्घात। वेदनी १, कषाय २, मरणांतिक ३, वैक्रीय ४, ए चार होय। दस भवनपती। व्यंतर, योतीषी, वैमानिक, तीर्यंच पंचेंद्री। ए चउ दंडके पांच समुद्घात। वेदनी १, कषाय २, मरणांतिक ३, वैक्रीय ४, तेजस ५, पृथ्वी, पाणी, अग्नी, वनस्पती, त्रण्य विकलेंद्री। ये सात दंडके। त्रण्य समुद्घात। वेदनी १, कषाय २, मरणांतिक ३। मनुष्यने सात समुद्घात ॥ १० ॥

॥ इग्यारमु दृष्टी द्वार कहे छे ॥

दृष्टि ३ ना नाम। समकित दृष्टि१, मिश्रदृष्टि २, मिथ्यात्वदृष्टि ३ ॥ नारकी ॥ दश भवनपती, व्यंतर, योतीषी, वैमानीक, तीर्यंच पचेंद्री। मनुष्य ए सोला दंडकें। त्रण्यदृष्टि। पांच थावरने।

एक मिथ्यादृष्टि । त्रण्य विकलेंद्रीने । समकित । मिथ्यात ए बे दृष्टि ॥ ११ ॥

॥ बारमुं दर्शन द्वार कहे छे ॥

दर्शन ४ नां नाम कहे छे । चक्षु दर्शन १, अचक्षु दर्शन२,अवधि दर्शन३, केवल दर्शन ४ ॥ नारकी ४ । दस भवनपति । व्यन्तर, योतिषी, वैमानिक । तीर्यंच पंचेन्द्रि । ए पन्नर दंडके । त्रण्य दर्शन । चक्षु १ अचक्षु २ अवधि दर्शन ३ पांच थावर । बेइंद्रि ने तेइंद्री । एक अचक्षु दर्शन । चौरेन्द्रि । चक्षुनें । अचक्षु बेदर्शन । मनुष्यनें चार दर्शन १२ ॥

॥ तेरमो ज्ञान द्वार कहे छे ॥

पांच ज्ञान, तीन आज्ञाननां नाम कहेछे । मति-ज्ञान १ श्रुतज्ञान २ अवधिज्ञान ३ मनपर्यव-ज्ञान ४ केवलज्ञान ५ मतिअज्ञान ६ श्रुत अज्ञान

७ विभंग अज्ञान ८। नारकी दस भवनपति। व्यन्तर। योतिषी। वैमानिक। तीर्यंच पचेंद्रि। ए पन्नर दडके। त्रणज्ञान। त्रण अज्ञान। ए ६ पामे। पांच थावरनें मति अज्ञान। श्रुत अज्ञान ए बे पामे, त्रण विकलेंन्द्रिने। बे ज्ञान। तथा बे अज्ञान ए चार पामें। मनुष्यनें पांच ज्ञान। तीन अज्ञान १२ ॥

॥ चउदमोयोग द्वार कहे छे ॥

हवे योग पन्नरनां नांम कहेछे। मननां ४ योग। सत्यमनयोग१ असत्यमनयोग२ सत्यमृपामनयोग३ असत्य मृपा मनयोग ४। वचनना चार योग कहे छे। सत्य वचनयोग, असत्य वचन योग, सत्य मृपा वचन योग, असत्य मृपा वचनयोग। कायाना सात योग कहेछे। उदारिक काया योग, उदारिक मिश्र काया योग, वैक्रिय काया योग, वैक्रिय मिश्र काया योग, आहारक काया योग,

आहारक मिश्र काया योग, कार्मण काया योग, नारकी, दस भुवनपती, व्यंतर, योतिषी, वैमानिक, ए चउद दंडके ग्यार योग होय ॥ मनना चार, वचनना चार, कायाना तीन । वैक्रिय कायायोग, वैक्रिय मिश्र काया योग, कार्मण काया योग ॥ पृथ्वी, पाणी, अग्नी, वनस्पती ने तीन योग । उदारिक, उदारिक मिश्र काया योग, कार्मणकाया योग, वायु ने पांचयोग, उदारिक, उदारिक मिश्र, वैक्रिय, वैक्रिय मिश्र, कार्मण, विकलेंद्रीय ने चार योग। उदारिक, उदारिक मिश्र, कार्मण ये तीन योग तथा असत्य मृषा वचन योग ये चार योग होय ॥ तीर्यंच पंचेंद्रीने तेर योग होय, मननाचार, वचनना चार, कायाना पांच, उदारिक, उदारिक मिश्र, वैक्रिय, वैक्रिय मिश्र, कार्मण, मनुष्य ने पन्नर योग होय ॥

॥ पन्नरमुं उपयोग द्वार कहे छे ॥

उपयोग वार ना नाम। पांच ज्ञान । मती ज्ञान,

श्रुत ज्ञान, अवधी ज्ञान, मन पर्यव ज्ञान, केवल-ज्ञान । तीन अज्ञान । मति अज्ञान, श्रुत अज्ञान, विभंग अज्ञान ! अने चार दर्शन । चक्षुदर्शन, अचक्षुदर्शन, अवधी दर्शन, केवल दर्शन ।ए बार उपयोगछे। नारकी, दसभुवनपती व्यंतर, योतिषी वैमानिक, तिर्यंच पचेंद्री, ए पन्नर दंडके । नव उपयोग । तीनज्ञान, तीन अज्ञान, तीनदर्शन ए नव उपयोग होय। पांच थावर ने तीन उपयोग। मति अज्ञान, श्रुत अज्ञान, अचक्षु दर्शन ए तीन होय । बेइंद्री, तेइंद्री ने तीन तथा पांच उपयोग होय । बेज्ञान, बे अज्ञान, एक अचक्षु दर्शन । चौरिंद्रियने छे उपयोग । बे ज्ञान, बे अज्ञान, बे दर्शन मनुष्य ने बार उपयोग पामे ॥

॥ सोलमु सत्तरमुं उपजवा चववानी संख्या द्वार ॥

नारकी, दस भुवनपती, व्यंतर, योतिषी, वैमानिक, तीर्यंच पचेंद्री, त्रण विकलेंद्री ए अढार

दंडके एक समय जीव एक, बे, तीन आदि लेई संख्याता तथा असंख्याता उपजे, ने संख्याता असंख्याता चवे। पांच थावर। एक समे जीव असंख्याता चवे, असंख्याता उपजे। साधारण ने अनंता उपजे ने अनंता चवे। एक समय मनुष्य ना जीव एक, बे आदि लेईने संख्याता उपजे ने संख्याता चवे॥

॥ अठारमुं आउखा द्वार कहे छे॥

समुचे नारकीनुं आउखो जघन्य दस हजार वर्षनु। उत्कृष्टो आउखो तेत्रीस सागरोपमनुं। हवे प्रथम नरकें जघन्य दस हजार वर्षनुं। उत्कृष्टो एक सागरोपम नुं। बीजी नरकें जघन्य एक सागरोपम नुं। उत्कृष्टो तीन सागरोपम नुं। त्रीजी नरकें जघन्य तीन सागरोपम नुं। उत्कृष्टो सात सागरोपम नुं। चोथी नरकें जघन्य सात सागरोपम नुं। उत्कृष्टो दस सागरोपम नुं। पांचमी

नरके जघन्य दस सागरोपम नुं । उत्कृष्टो सतर सागरोपम नुं । छट्ठी नरके जघन्य सतर सागरोपम नुं । उत्कृष्टो बावीस सागरोपम नुं । सातमी नरके जघन्य बावीस सागरोपम नु । उत्कृष्टो तेत्रीस सागरोपमनुं ॥ हवे भवनपतीनां दस जाती तेहना बीस इंद्र तेहना नाम ॥ चमरेंद्र, बलेंद्र, धरणेंद्र, भूतानीइन्द्र, वेणुदेव, वेणुदाली, हरिकंत, हरिसिंह, अग्निसिंह, अग्निमाणव, पूण, बिसिद्ध, जलंतक, जलप्रभ, अमितगति, मृगवाहन, वेलंब, प्रभंजन, घोस, महाघोस, ते बीस मध्यें चमरेन्द्रनी जाती नुं जघन्य आउखो दस हजार वर्षनु । उत्कृष्टो एक सागरोपम नुं । चमरेंद्रनी देवीनुं जघन्य दस हजार वर्षनुं । उत्कृष्टो साडात्रण पल्योपम नुं । बलेंद्रनुं जघन्य दस हजार वर्षनुं । उत्कृष्टो एक सागरोपम झाझेरु । बलइंनी देवीनु जघन्य दस हजार वर्ष नुं । उत्कृष्टो साडाचार पल्योपम नु । हवे दक्षिण पासाना धरणेंद्र आदि लेई ने नव इद्र नुं जगन्य

अउखो दस हजार वर्षनुं । उत्कृष्टो दोढ पल्योपम नुं । त नव इंद्रनी देवीनुं जघन्य आउखो दस हजार वर्षनुं । उत्कृष्टो आउखो अडधा पल्योपमनुं । तथा उत्तरना पासाना भुतानी इंद्र आदि लेईने नव इंद्र नुं जघन्य दस हजार वर्षनुं । उत्कृष्टो बे पल्योपम देशऊणो । ने उत्तरना पासाना नव इंद्र नी देवी नुं जघन्य दस हजार वर्षनुं । उत्कृष्टो एक पल्योपम देश उणो । पृथ्वीकाय नुं जघन्य अंतर मुहूर्त नुं । उत्कृष्टो बावीस हजार वर्ष नुं । तथा बादर पृथ्वीना ६ भेद कहे छे ॥ सन्ना गोपीचंदना दिक ते नुं उत्कृष्टो एकहजारवर्षनुं बीजी सुधानामें पृथ्वी ते नदीनी भेखला दिक प्रमुख तेनुं आउखु बार हजार वर्ष नुं । त्रीजी वालुका नामें पृथ्वी ते सचित वेलु प्रमुख ते नुं उत्कृष्टो चउद हजार वर्ष नुं । चोथी मणासिल नामें पृथ्वी ते सुरमादिक ते नुं उत्कृष्टो सोल हजार वर्ष नुं । पांचमी शरकरा नामें पृथ्वी ते सुवर्णा दिक ते नुं उत्कृष्टो अठार

हजार वर्षनु । छट्ठी खर नाम पृथ्वी ते रत्नादिक ते नुं । उत्कृष्टो बावीस हजार वर्ष नुं । पाणी नुं उत्कृष्टो सात हजार वर्ष नु । अग्नि नुं उत्कृष्टो त्रण्य दिवस नुं । वायुकायनो उत्कृष्टो तीन हजार वर्ष नुं । वनस्पती नुं उत्कृष्टो दस हजार वर्ष नुं । बेइंद्री नुं बार वर्ष नुं । तेइद्री नु उत्कृष्टो ओगणपचास दिवस नुं । चोरिंद्री नुं उत्कृष्टो छे मासनु। पांच थावर नुं त्रण्य विकलेंद्री ए आठ दडके सर्व जीव नुं जघन्य अंतर मुहुर्त नुं जाणवो। हवे तीर्यंच पचेंद्रीना दस भेद लिख्यते ॥ ते मध्ये जलचर गर्भज नुं जघन्य अंतर मुहुर्तनुं । उत्कृष्टो एक पूर्वकोडी वर्षनु । जलचर समुर्छिम नुं उत्कृष्टो आउखो पूर्वकोडी वर्षनु । थलचरगर्भज नुं उत्कृष्टो त्रण्य पल्योपम नुं । समुर्छिम थलचर नु चोरासी हजार वर्षनु । गर्भज खेचरनुं उत्कृष्टो आउखो पल्योपमनुं असंख्यातमोभाग । समुर्छिम खेचरनुं उत्कृष्टो बहोत्तर हजारवर्षनुं । गर्भज उरपरिसर्पनु उत्कृ

छे एकपूर्वकोडी वर्षनुं। समुर्छिम उरपरिसर्पनुंउत्कृष्टो त्रेपन हजार वर्षनुं। गर्भज भुजपरिसर्पनुं उत्कृष्टो एक पूर्व कोडी वर्षनुं। समुर्छिम भुजपरि, सर्प नुं उत्कृष्टो बेतालीस हजार वर्ष नुं। ए सर्वे उत्कृष्ट आउखो जाणवो ॥ दस भेद तीर्यंचना कह्या ते सर्वनुं जघन्य आउखो अंतरमुहुर्तनुं छे। गर्भज मनुष्य नुं उत्कृष्टो आउखो तीन पल्योपमनुं। जघन्य अंतर मुहुर्त नुं। व्यंतर नुं जघन्य दसहजार वर्षनुं उत्कृष्टो एक पल्योपम नुं। व्यंतरनी देवी नुं जघन्य दसहजार वर्षनुं उत्कृष्टो अर्धा पल्योपमनुं। योतिषना पांच भेद कहे छे ॥ चन्द्रमा, सूर्य, ग्रह नक्षेत्र, तारा। ते मध्ये चंद्रमानुं जघन्य आउखो पाव पल्योपमनुं। उत्कृष्टो एक पल्योपम ने एक लाख वर्षनुं। चंद्रमानी देवीनुं उत्कृष्टो अर्धपल्योपम अने पचास हजार वर्षनुं। सूरज नुं उत्कृष्टो एक पल्योपम अने हजार वर्षनुं। सूर्यनी देवी नुं उत्कृष्टो अर्ध पल्योपम अने पांचसो वर्ष नुं।

ग्रह नुं उत्कृष्टो एक पल्योपम नुं । ग्रहनी देवीनु उत्कृष्टो अर्धा पल्योपम नुं । नक्षत्र नुं उत्कृष्टो अर्धा पल्योपम नु । नक्षत्रनी देवी नु उत्कृष्टो पाव पल्योपम झाझेरो । ए आठे भागे जीवनु जघन्य आउखो पाव पल्योपमनुं । तारा नुं उत्कृष्टो पाव पल्योपमनुं । जघन्य एकपल्योपमनो आठमो भाग तारानी देवीनु उत्कृष्टो एक पल्योपमनो आठमो भाग झाझेरुं जघन्य एकपल्योपमनो आठमोभाग ॥ हवे वैमानिक देव नुं आउखो कहेछे ॥ सौधर्म देवलोके जघन्य एक पल्योपम नु । उत्कृष्टो बे सागरोपमनुं । ईशान देवलोके जघन्य एक पल्योपम झाझेरु । उत्कृष्टो बे सागरोपम झाझेरु । त्रीजे सनतकुमार देवलोके जघन्य बेसागरोपमनुं । उत्कृष्टो सात सागरोपमनुं । चोथा महेंद्र देवलोके जघन्य बे सगरोपम झाझेरुं । उत्कृष्टो सात सागरोपम झाझेरु । पांचमे ब्रह्म देवलोके जघन्य सात सागरोपमनु । उत्कृष्टो दस सागरोपमनुं । छठे लांतक

देवलोके जघन्य दस सागरोपमनुं । उत्कृष्टो चउद सागरोपमनुं । सातमे शुक्र देवलोके जघन्य चउद सागरोपमनुं । उत्कृष्टो सत्तर सागरोपम नुं । आठ मैं देवलोके जघन्य सत्तर सागरोपम नुं । उत्कृष्टो अठार सागरोपम नुं । नवमे अनंत देवलोके जघन्य अठार सागरोपम नुं । उत्कृष्टो ओगणीस सागरोपम नुं । दसमे प्रणत देवलोके जघन्य ओगणीस सागरोपम नुं । उत्कृष्टो बीस सागरोपमनुं । ग्यारमे अरण्य देवलोके जघन्य बीस सागरोपमनुं उत्कृष्टो इकवीस सागरोपमनुं । बारमे अच्युत देव लोके जघन्य इकवीस सागरोपमनुं । उत्कृष्टो बावीस सागरोपमनुं ॥ प्रथम नवग्रेवेके जघन्य बावीस सागरोपमनुं । उत्कृष्टो तेवीससागरोपम नुं । बीजे ग्रेवेके जघन्य तेवीस सागरोपमनुं । उत्कृष्टो चोवीस सागरोपमनुं । तीजे नवग्रेवेके जघन्य चोवीस सागरोपमनुं । उत्कृष्टो पचीस सागरोपमनुं । चोथे ववग्रेवेके जघन्य पचीस सागरोपम नुं । उत्कृष्टो

छवीस सागरोपमनुं। पांचमें ग्रेवेके जद्यन्य छवीस सागरोपमनुं। उत्कृष्टो सत्तावीस सागरोपमनुं। छट्ठेग्रेवेके जघन्य सत्तावीस सागरोपमनुं। उत्कृष्टो अठ्ठावीस सागरोपमनुं। सातमे ग्रेवेके जघन्य अठ्ठावीस सागरोपमनुं। उत्कुष्टो ओगणतीस सागरोपमनुं। आठमें ग्रेवेके जघन्य ओगणतीस सागरोपमनु। उत्कृष्टो तीस सागरोपमनुं। नवमें ग्रेवेके जघन्य तीससागरापमनुं। उत्कृष्टो एकतीस सागरोपमनुं॥ विजय, वैजयंत, जयंत, अपराजीत ए चार विमानें जघन्य एकतीस सागरोपमनु। उत्कृष्टो तेत्रीस सागरोपमनुं। सर्वार्थ सिद्धी जघन्य तथा उत्कृष्टो आउखो तेत्रीस सागरोपम पूरो॥

॥ हवे ओगणीसमु पर्याप्ती द्वार कहे छे ॥

पर्याप्ती छ ना नाम कहे छ। अहार पर्याप्ती, शरीर पर्याप्ती, इंद्रि पर्याप्ती, सासोस्वास पर्याप्ती, भापा पर्याप्ती, मनः पर्याप्ती॥ नारकी, दस भुवन

पती, व्यंतर, वैमानिक, तीर्यंच पंचेंद्री, मनुष्य ए सोल दंडके छ पर्याप्ती। पांच थावरने चार पर्याप्ती अहार, शरीर, इंद्री, सासोस्वास ॥ बेइंद्री, तेइंद्री, चोरिंद्री, असन्नी पंचेंद्री ने मन विना पांच पर्याप्ती होय ॥

॥ बीसमुं अहारक द्वार कहे छे ॥

अहारना त्रण नाम ॥ ओझा अहार, रोम अहार, कवल अहार। नारकी, दस भुवनपती, व्यंतर, योतीषी, वैमानिक, पांच थावर ए ओगणीसदंडके बे अहार, ओझा, ने रोम ए बे तिर्यंच पंचेंद्री अने मनुष्य त्रण विकलेंद्री ए पांच दंडके त्रण अहार पामें ॥

॥ इकीसमुं गता गती द्वार कहे छे ॥

नारकी थी चवीने तिर्यंच पंचेंद्री अने मनुष्य मांही जाय अने ए बे मांही आवे। दसभुवनपती

व्यतर, योतिषी, वैमानिक, पहिला बीजा देवलोके गता गति कहेछे। पृथ्वी, पाणी, वनस्पती, तिर्यंच पचेंद्री अने मनुष्य ए पांच गति। मनुष्यअने तिर्यंचपचेंद्री एवे दडके आगति, त्रीजादेवलोकथीमाडी आठमां देवलोक सुधी तीर्यच पंचेंद्री अने मनुष्य ए वे दंडकनी गति, एहांज वे दडकनी आगति, नवमा देवलोकथी मांडी सर्वार्थ सिद्धी सुधी, मनुष्यने अगति अने मनुष्यने गति मनुष्य ने चोवीसनी गति, तेऊ, वाऊ विना वावीस नी आगति, तीर्यंच पचेद्रीने चोवीसनी गति अने चोवीसनी आगनि, त्रण विकलेंद्री, पांच थावर, तिर्यंच पचेंद्री, मनुष्य ए दस दडकनी आगीत, एहीज दसनी गति, पृथ्वी. पाणी, वनस्पनी ए त्रणने एहीज दसनी गति, नारकी विना तेवीस नी आगति, तेऊ, वाऊ ने तेर देवता। नारकी, मनुष्य विना ९नी गति। अने तेर देवता नारकी विना १० आगति छे॥ इति २१ द्वार सपूर्ण॥

॥ हवे बावीसमुं वेद द्वार कहे छे ॥

वेद तीनना नाम ॥ पुरुषवेद, स्त्रीवेद, नपुंसक वेद । नारकी, पांच थावर, त्रण विकलेंद्री ए नव दंडके एक नपुंसक वेद । तिर्यंच पंचेंद्री, मनुष्यने त्रण वेद । देवताने तेर दंडके स्त्री ने पुरुष ए बे वेद पामें ॥

॥ हवे त्रेवीसमुं भवन द्वार कहे छे ॥

पहिली नरके ीस लाख नरका वासा, बीजी नरके पच्चीस लाख नरका वासा, त्रीजी नरके पन्नरलाख नरका वासा, चोथी नरके दसलाख नरका वासा, पांचमी नरके त्रणलाख नरका वासा, छट्ठी नरके एक लाख मां पांचउणा नरका वासा, सातमी नरके पांच नरका वासा सर्व थईने चोरासी लाख नरका वासा जाणवा । तथा दक्षिण ना पासा ना दस इंद्रना भुवन कहे छे । चमरेंद्र ने चोंत्रीस लाख भुवन, धरणेंद्रने

चुमालीस लाख भुवन, वेणुदेवने अडत्रीस लाख भुवन, हरिकंत ने चालीस लाख भुवन, अग्निसिह ने चालीस लाख भुवन, पूर्णने चालीस लाख भुवन, जलकंतने चालीस लाख भुवन, अमितगति ने चालीस लाख भुवन, वलंविक ने पचास लाख भुवन, घोसने चालीस लाख भुवन, दक्षिण पासा ना दस इंद्रना चार कोडी ने छ लाख भुवन जाणवा ॥ हवे उत्तरना दस इंद्रना भुवन कहेछे। वलेंद्रने त्रीस लाख भुवन, भुतानेंद्र ने चालीस लाख भुवन, वेणु दाली ने चोत्रीस लाख भुवन, हरिसिंह ने छत्रीस लाख भुवन, अग्नि मानवने छत्रीस लाख भुवन, विपीष्ट ने छत्रीस लाख भुवन, जल प्रभ ने छत्रीस लाख भुवन, मृगावाहण ने छत्रीस लाख भुवन, पर भंजण ने छियालीस लाख भुवन, महा घोप ने छत्रीस लाख भुवन छे। तेथी उत्तर दिसी ना दस इन्द्रना भुवन छे ते प्रत्येक चार लाख ओछा जाणवा, सर्व थई ने

भुवनपतिना भुवन सात कोडी ने बहोतर लाख भुवन । हवे भुवन पतिना भुवन कहे छे । एक लाख अस्सीहजारयोजन रत्नप्रभा पृथ्वीनोपिंडछे। ते मध्ये एक हजार योजन उपर मुकिये, हजार योजनहेठा मुकिये, बीचमां एकलाख अट्ठोतरहजार योजन नी पोहोलाण छे। ते मांहे संख्याता असंख्याता योजन ना भुवन पतिना भुवन छे । सुक्षम पांच, थावर तीन, विगलेंद्री, तिर्यंच पंचेंद्री लोकने देशे देशे छे। मनुष्य, बादर, अग्निकाय अढी द्वीपमां छे। व्यंतर देवता रत्नप्रभा पृथ्वी नो उपलो एक हजार योजन ते मध्ये एक सौ योजन उपर मुकिये अने सौ योजन नीचे मुकिये बीचमें आठसौ योजन मांहीं असंख्याता नगरछे। व्यंतरना नगर भरतक्षेत्रजेवडाछे। मध्ये महाविदेह जेवडा छे, उत्कृष्टा जंबूद्वीप जेवडा छे, योतिषी ना विमान असंख्याता छे, संभुतला पृथ्वी थी मांडीने सातसौ ने नेवु योजन तारा छे, ते उपर

दस योजन सूर्य छे, ते उपर असी योजन चन्द्रमा छे, ते उपर चार योजन नक्षत्र छे, ते उपर चार योजन बुद्ध छे, ते उपर त्रण योजन शुक्र छे, ते उपर त्रण योजन गुरु छे, ते उपर त्रण योजन मंगल छे, ते उपर त्रण योजन शनीश्वर छे । हवे वैमानिक ना विमाननी संख्या कहे छे। सौधर्म देवलोके बत्तीस लाख विमान छे, ईशान देवलोके अट्ठावीस लाख विमानछे, सनतकुमार देवलोके बारलाख विमान छे, महेंद्र देवलोके आठ लाख विमान छे, ब्रह्म देवलोके चारलाख विमानछे, लांतक देवलोके पचास हजार विमान छे, शुक्र देवलोके चालीस हजार विमान छे, सहस्त्र देवलोके छ हजार विमानछे, आनत प्राणत देवलोके चारसौ विमान छे, अरण्य अच्युतने तीनसौ विमान छे, नव ग्रैवेक मांही प्रथम त्रीके एकसो ग्यारा विमानछे, बीजे त्रीकें एक सो सात विमान छे तीजे त्रीकें सो विमान ते उपर अनुत्तर विमान

पांच विमान छे, तेउपर बारयोजन सिद्धसिलाछे।

॥ हवे चोवीसमुं प्राण द्वार कहे छे ॥

हवे दस प्राणना नाम कहे छे। पांच इंद्री, त्रण वल, सासोस्वास, अउखु ए दस प्राण छे। नारकी तेर देवता, मनुष्य, तीर्यंच पंचेंद्री ए सोल दंडके दस प्राण, पांच थावर, ने फरस इंद्री काय बल, सासोस्वास, आउखू, वेइंद्री ने ६ प्राण। फरसइंद्री, रसइंद्री, वचन वल, काय वल, सासोस्वास, आ, उखु। तेइंद्रीने सातप्राण नाक सहित करिये छे। चौरिंद्री ने आठ प्राण आंख सहित करिये ॥

॥ हवे पचवीसमुं संपदा द्वार कहे छे ॥

संपदा तेवीस ना नाम। चक्र रत्न, छत्र रत्न, दंड रत्न, खडग रत्न, कांगणी रत्न, चर्म रत्न, मणी रत्न, ए सात एकेंद्री रत्न छे। गाथापति, सेनापति, पुरोहित, वार्धिक, अश्व रत्न, गजरत्न

स्त्री रत्न, ए सात पंचेंद्री । तिर्थंकर, चक्रवर्ती, बलदेव, वासुदेव, केवली, साधु, श्रावक, सम्यकत्व दृष्टी, मंडलिक राजा ए नव निधान प्रथम नरक नो नीकल्यो जीव सात एकेंद्री रत्न विना सोल संपदा पामें । बीजी नरकनो नीकल्यो जीव जीव सात एकेंद्री रत्न चक्रवर्ती विना पन्नर संपदा तीजी नरकनो निकल्यो जीव सात एकेंद्री चक्रवर्ती, बलदेव, वासुदेव, विना तेर संपदा पामे । चोथी नरकनो निकल्यो जीव तिर्थंकर विना वार संपदा पामे । पांचमी नरकनो नीकल्यो जीव केवली विना ग्यार संपदा पामें । छट्ठी नरकनो नीकल्यो जीव दस संपदा पामें साधु विना सातमी नरकनो नीकल्यो जीव त्रण संपदापामें। अश्व, गज, समकित ये तीन ॥ दस भुवनपति, व्यंतर, योतिषी ए वार दंडकनो निकल्यो जीव तिर्थंकर वासुदेव विना एकवीस सपदा पामें । पृथ्वी, पाणी, वनस्पती, तिर्यंच पचेंद्री, मनुष्य

ए पांच दंडकनो निकल्योजीव तिर्थंकर, चक्रवर्ती, बलदेव, वासुदेव विना ओगणीस संपदा पामें । तेउ, वाउ, नो निकल्यो जीव सात रत्न एकेंद्री अस्व, गज, सहित नव संपदा पामें । त्रण विकलेंद्री नो निकल्यो जीव तिर्थंकर, चक्रवर्ती, बलदेव, वासुदेव, केवली विना अठार संपदा पामें । वैमानिक मां प्रथम देवलोक अने बीजा देवलोक नो नीकल्यो जीव तेवीस संपदा पामें त्रीजा देव लोकथी मांडी आठमां देवलोक सुधी नो निकल्यो जीव सात एकेंद्री रत्न विना सोल संपदा पामें । नवमां देवलोकथी मांडी नव ग्रैवेके सुधीनो निकल्यो जीव सात एकेंद्री, अश्व, गज विना चउद संपदा पामें । पांच अनुत्तर विमान नो निकल्यो जीव वासुदेव विना आठ निधान पामें ॥

॥ हवे छव्वीसमुं धर्म द्वार कहे छे ॥

तीर्यंच पंचेंद्री, मनुष्य ने करणी रूपी धर्म छे बावीस दंडके करणी रूपी धर्म नथी ॥

॥ सत्तावीसमुं योनी द्वार कहे छे ॥

सात लाख पृथ्वी काय, सात लाख अप्पकाय सात लाख तेउकाय, सात लाख वाउकाय, दस लाख प्रत्येक वनस्पती काय, चौदलाख साधारण वनस्पती काय, बे लाख बेइंद्री, बे लाख तेइंद्री, बे लाख चौरिंद्री नारकीनी चार लाख योनी, चार लाख तिर्यंच पंचेंद्री नी, चार लाख देवता नी, चौद लाख मनुष्य नी ए चौरासी लाख जीवा योनी थई ॥

॥ हवे अठावीसमु कुल कोटि द्वार कहे छे ॥

नारकीनी पचीस लाख कुल कोटी, देवतानी छवीसलाख कुल कोटी, पृथ्वीनी बार लाख कुल कोठी, पाणी नी सात लाख कुल कोटी, अग्निनी तीन लाख कुल कोटी, वाउ नी सातलाख कुल कोटी, वनस्पतीनी अठावीस लाख कुल कोटी,

बेइंद्री नी सात लाख कुल कोटी, तेइंद्रीनी आठ लाख कुल कोटी, चोइंद्री नी नव कुल कोटी, मनुष्यनी बार लाख कुल कोटी, तिर्यंच पंचेंद्री ना पांच भेद ॥ जलचर नी साडीबार लाख कुल कोटी, थलचर नी दस लाख कुल कोटी, खेचर नी बारलाख कुल कोटी, उरपरिसर्पनी दस लाख कुल कोटी, भुजपरिसर्प नी नव लाख कुल कोटी सर्व एक क्रोड अने, साढी सत्ताणु लाख कुल कोटी जाणवी ॥

॥ हवे ओगणत्रीसमुं अल्प बहुत्व द्वार कहे छे ॥

सर्वथी गर्भज मनुष्य थोडा, तेथी बादर अग्नि ना जीव असंख्याता गुणा, तेथी वैमानिक ना जीव असंख्याता गुणा, तेथी नारकी ना जीव असंख्यता गुणा, अधिक । तेथी व्यंतर ना जीव असंख्याता गुणा, तेथी योतिषना जीव असंख्या ता गुणा । तेथी चौरिंद्री ना जीव असंख्याता

गुणा, तेथी पंचेंद्री ना जीव विशेषाधिक, तेथी बेइंद्री विशेषाधिक, तेथी तेइंद्री ना जीव विशेषाधिक, तेथी पृथ्वी कायना जीव असंख्याता गुणा तेथी वाउ कायना जीव असंख्याता गुणा, तेथी अप्पकाय ना जीव असंख्याता गुणा, तेथी वनस्पती कायना जीव अनंत गुणा अधिक होय ॥

॥ इति ओगणत्रीस द्वार संपूर्ण ॥

॥ अथ मिथ्यात्व गुणठाणानी स्थिती कहेछे ॥

अभवि आसरी अनादि अनंत, भवि आसरी सादी सांत । पढवी आसरी सादी सांत । मिथ्या-गुणठाणानो लक्षण कहेछे ॥ जेम कोई माणसे धतूरानुं बीज खाधू होय तेम ते सफेद वस्तू ने पीली वस्तू देखे तेमते मिथ्यात्व गुणठाणा वालो छे ते सुदेवने कुदेव माने सुगुरू ने कुगुरू माने अने जे हिंसा धर्म छे तेने अहिंसा माने तेम बधुं विपरीत माने त्यारे कोई तरक करे छे के तेनामां एक गुण नथी त्यारे तेने मिथ्यात्व भूमि स्थल कहिये तो सामों माणस कहे के सर्व जीवों ने अक्षरनों अनंतमों भाग उघाडो छे ने सर्व आठ रूचक प्रदेश छे तेमा भविने निर्मल होय अभविने झांखाहोय माटे तेने मिथ्यात्व गुणठाणो

कहिये त्यारे सामो तर्क करे छे के कोई दिवस मोक्षे जसे तोके हां भवि हसे तो कोईकवार समकित पामी मोक्ष हेतूनी क्रिया करी मोक्षे जसे माटे तेने मिथ्यात्व गुणठाणु कहिये। हवे सास्वादन गुणठाणानुं लक्षण कहेछे ॥ जघन्य उत्कृष्टी छ आवलीनी स्थिती हवे सास्वादन गुणठाणु मिथ्यात्वथी अनंत गुणो विशुद्धि ने मिश्रथी अनतगुणो हीन तेमांथी नपुंसक वेदने मिथ्यात्व मोहनी ए प्रकृति गई तेथी करीने विशुद्ध थयुं जेम कोई माणसे खीर खाधीहोय अने पछी वमी नाखे पण तेनुं स्वाद जाय नहीं । हवे मिश्र गुणठाणानी स्थिती कहे छे ॥ जघन्य एक समय उत्कृष्टि अंतर मुहूर्तनी होय सास्वादनथी अनंत गुणो विशुद्ध ने अविरतीथी अनत गुणो हीन तेमांथी अनंतानु बंधी चोकडीने स्त्री वेद ए पांच प्रकृती गई तेथी विशुद्धथयो, हवे मिश्र गुणठाणां नु लक्षण कहेछे। समकितने मिथ्यात्व बे मलीने

मिश्रथाय मिश्र गुणठाणा वालाने जैनधर्म ऊपर राग नथी द्वेशपण नथी कदी आवेतो अंतर मुहूर्त सुधी रहे ॥ ४ ॥ हवे चोथुं अविरती गुणठाणानी स्थिती कहे छे ॥ जघन्य अंतर मुहुर्तनी ने उत्कृष्टी तेत्रीस सागरोपमनी ने मिश्र थी अनंत गुणो विशुद्ध ने देश विरतीथी हीण तेमां थी अनंतानु बंधी चोकडी ने त्रण मोहनी ते सात प्रकृति जाय ने अविरती गुणठाणे वरततां त्रण प्रकारे जीव छे एक जीव जाणे छे आदरतो नथी ने पालतो नथी, ते श्रेणिक राजानी पेठे जाणवो· एकजीव जाणे छे आदरे छे ने पालतो नथी ते पडता आसरी जाणवो, एक जीव जाणे छे आदरतो नथी ने पाले छे ते अनुत्तर वैमान ना देवता जाणवा ॥ ५ ॥ हवे पांचमां देश· विरती गुणठाणानी स्थिती कहे छे ॥ जघन्य अं· तर मुहूर्तने उत्कृष्टी देश उणी पूर्व कोडी वर्षनी हवे अविरती गुणठाणाथी अनंत गुणो विशुद्धने

परमत्तथी हीन तेमांथी बीजा कषायनी चोकडी गई तेथी विशुद्ध थयो, हवे तेहनो लक्षण कहे छे देशविरती गुणठाणे वर्तता जीव नोकारसीथी मांडी ने बार व्रत उच्चरे पण देश करी उणो तेमांथी सर्व विरती गुण उणो छे ॥ ६ ॥ हवे छट्ठु प्रमत्त गुणठाणानी स्थिती कहेछे ॥ जघन्य अंतर मुहूर्त उत्कृष्टी देशे उणी पूर्व कोडी वर्षनी देशविरतीथी अनंत गुणो विशुद्ध ने अप्रमत्तथी हीण तेमांथी त्रिजा कषायनी चोकडी गई तेथी करीने विशुद्ध थयो । हवे तेहनो लक्षण कहेछे ॥ प्रमत्त गुणठाणा वालो पांच प्रमादें करीने सहित छे तेथी तेना अध्यवसाय पण मलीन छे तेनुं चारित्र पण मलीनछे ॥ ७ ॥ हवे अप्रमत्त गुणठाणानी स्थिती कहेछे ॥ जघन्य अतरमुहूर्तनी ने उत्कृष्टी देशे उणी पूर्व कोडी वर्षनी हवे अप्रमत्तथी अनंत गुणो विशद्ध ने अपूर्वथी अनंत गुणो हीण ने तेमांथी सांगने अरातिगई, हवे तेनो लक्षण कहेछे

के अप्रमत्त गुणठाणा वालो पांच प्रमादे करी रहित होय तेथी तेना चारित्र पण निर्मल होय ते तेना अध्यवसाय पण निर्मल होय ॥ ८ ॥ हवे अपूर्व गुणठाणानी स्थिती कहे छे ॥ जघन्य एक समय उत्कृष्ट अंतर मुहूर्तनी, हवे अप्रमत्तथी अनंत गुणो विशुद्ध ने आनिवृत्ती बादर गुणठाणाथी अनंत गुण हीन तेमांथी भय शोग हास्य रति गई तेथी विशुद्ध थयो । हवे तेनो लक्षण कहे छे अपूर्व गुणठाणे वर्ततो जीव त्रण करण करे छे यथा प्रवृति करण अपूर्व करण अनिवृति करण समय समय पल्योपमनो असंख्यातमो भाग खपावतो खपावतो पांच वाना करे स्थिति घातरस, घात गुण, संक्रमणगुण, श्रेणी, अपूर्व बंध ए पांच वाना तेज करतो करतो अंतर मुहूर्त ते यथाप्रवृति करण करे समय समय पांच वाना खपावतो अंतर मुहूर्त यथा प्रवृति करण थी अनंत गुण विशुद्ध अपूर्व करण करे समये समये पांच वाना

खपातो अंतर मुहूर्त अपूर्व करणथी अनंतगुण विशु-
द्ध अनिवृति करणकरे त्यां आयु कर्म वर्जीने सात
साते कर्मनी स्थिती खपावी ने एक कोडा कोडी
लावीने मले त्यारे ग्रथी भेद थाय ग्रंथी भेद ते शुं
अनादी कालनी राग द्वेषनी गांठ भेदी नांखी
हवे अपूर्व गुण ठाणु नाम पड्यो के कोई दिवस
पाम्यो नथी ते नवुं शुं पाम्यो तो समकित ॥९॥
हवे अनिवृति बादर गुण ठाणानी स्थिती कहे छे.
जघन्य एक समय उत्कृष्टी अन्तर मुहूर्तनी हवे ते
अपूर्व करण थी अनंत गुण विशुद्ध अने सुक्षम
संपराय थी हीण ते मायी संजलना लोभ विना
त्रिक ने पुरुष वेद गयो हवे तेनो लक्षण कहे छे
श्रेणिपर चढतां सर्व जीवना अध्यव साय सरखा
होय छे जरा पण फार फेर नथी करीने अनिवृति
थयो ॥ १० ॥ हवे दसमां सुक्षम संपराय गुण
ठाणानी स्थिती कहे छे जघन्य एक समय उत्कृष्ट
अन्तर मुहूर्तनी हवे अनिवृति बादर गुण ठाणा

थी अनंत गुण विशुद्ध ने उपशान्त मोहनी थी हीण तेमाथी संजलनो लोभ घणो जाडो हतो ते सुक्षम मात्र रह्यो ॥ ११ ॥ हवे उपशान्त मोहनी गुण ठाणानी स्थिती कहे छे जघन्य एक समय नी उत्कृष्टी एक मुहूर्त ते सुक्षम गुण ठाणा थी अनंत गुणु विशुद्ध ने क्षीण मोहनी थी हीण तेमां थी मोहनी कर्मनी प्रकृति उपस मावी राखी छे केवी रीते के कादव वाला पाणी माहे कादव वेशी गयो छे पण जो कोइक माणस अन्दर पगमूके तो बधो कादव उपर आवी जाय तेवी रीते उप समावी राखी छे ॥ १२ ॥ हवे क्षीण मोहनी गुण ठाणानी स्थिती कहे छे जघन्य एक समय ने उत्कृष्टी अन्तर मुहूर्तनी उपशान्त मोहनी गुण ठाणा थी अनन्तगुण विशुद्ध ते सजोगी थी हीण तेमाह थी मोहनी कर्म खपाव्यो हवे तेनो लक्षण कहे छे ज्यारे मोहनी कर्मनो क्षय थयो त्यारे यथा ख्यात चारित्रनी प्राप्ति थई जेम कोई माणस समुद्रमा

तरवान पड्यो तेने तरतां २ थाक लाग्यो त्यारे द्वीप ऊपर बेसीने विसामो खाय छे ने एम विचारे छे आ थोडुं पाणी छे तेने हमणा तरी जईश तेम आ ससार समुद्रने विशे तरतां २ थाक लाग्यो त्यारे यथाख्यात चारित्र रूपी द्वीप मल्यो त्यां बेसीने विसामो खाय छे ने एम विचारे छे के म्हारे हवे थोडो ससार छे ते हमण तरी जईश ॥ १३ ॥ हवे सजोगी गुणठाणानी स्थिती कहे छे जघन्य अंतर मुहुर्त उत्कृष्ट देशे उणी पूर्व कोड़ी वरष नी हवे तेनो लक्षण कहे छे तिहां चारे घातिया कर्मनो क्षय कर्यो मन वचन कायाना जोग मोकला छे हाले छे चाले छे देशना आपे ॥ १४ ॥ हवे अजोगी गुणठाणानी स्थिती कहे छे पांच लघु अक्षरनी अ इ उ ऋ ऌ अघाती कर्मनो क्षय कर्यो मन वचन कायाना योग रूंधे सेलेशी करण करे ॥ संपूर्ण ॥

॥ गुणठाणा द्वार लिख्यते ॥

ते १४ गुणठाणा उपर चालसे ते गुणठाणा १४ समवायांगजी सूत्र मांहीं कह्या छे। २५ द्वारना नाम कहे छे। नाम द्वार १, लक्षण द्वार २, स्थिती द्वार ३, क्रिया द्वार ४, सत्ता द्वार ५, बंध द्वार ६, उदे द्वार ७, उदीरणा द्वार ८, निर्झरा द्वार ९, भाव द्वार १०, कारण द्वार ११, परीसा द्वार १२, आत्मा द्वार १३, जीवना भेद द्वार १४, गुणठाणा द्वार १५, योग द्वार १६, उपयोग द्वार १७, लेश्या द्वार १८, हेतु द्वार १९, मार्गणा द्वार २०, ध्यान द्वार २१, जीवा योनी द्वार २२, दंडक द्वार २३, सनंत निरंतु द्वार २४, अल्पा बहुत्व द्वार २५

॥ हवे नामद्वार कहेछे ॥

पहिलो मिथ्यात्व गुणठाणो, बीजो सास्वादन गुणठाणो, त्रीजो सास्वादन गुणठाणो, चोथो अवृत्ती

समकितदृष्टि गुणठाणो, पांचमो देशवृत्ती गुणठाणो, छट्ठो प्रमत्त गुणठाणो, सातमो अप्रमत्त गुणठाणो, आठमो अपूर्व गुणठाणो, नवमो अनिवृत्ती बादर गुणठाणो, दसमो सुक्षम संपराय गुणठाणो, इग्यारमो उपशांत मोह गुणठाणो, बारमो खीणमोह गुणठाणो तेरमो संयोगी गुणठाणो, चवदमो अयोगीगुणठाणो.

॥ हवे लक्षण द्वार लिख्यते ॥

पहिलो मिथ्यात्व गुणठाणानो लक्षण कहे छे । श्री वीतराग निर्वाण अधिक ओछी प्ररूपे विपरीत सरदे जिन धर्म ऊपर दुष्ट परिणाम राखे कुदेव, कुगुरू कुधर्म कुशास्त्र ४ बोल ऊपर आस्ता राखे तेहने मिथ्यात्व गुणठाणो कहिये छे । त्यारे श्रीगो· तमश्वामी हात जोडी मानमोडी विनय नमस्कार करी श्री भगवंतने पूछता हवा स्वामीनाथ एहने शुं गुण नीपन्यो त्यारे श्री भगवंत देवजी बोल्या अहो गोतम गुण ए निपन्यो जीव रूपी दही

कर्म रूपी लाकडी चारगतीने चोवीसी दंडके भमे पण शातानो ठिकाणो नथी। हवे २ सास्वादन गुणठाणानो लक्षण कहे छे। तेहनो दृष्टांत कहे छे जेम कोईक मनुष्य खीर खांडनो भोजन जीम्यो हतो ते समान तो समकित पाछो वमन कीधो त्यारे कोई पुरुष पूछो तुं काई जीम्यो त्यारे कह्यो खीरनो स्वाद रह्यो ते समान सस्वादन समकित। बीजो दृष्टांत घंटानो नाद पहिलेतो गहिर गंभीर शब्द निकले ते समान तो समकित पाछो रण-कारो रहिगयो ते समान सास्वादन गुणठाणो। त्रीजो दृष्टांत जीव रूपी आंबो अने परिणामरूपी डाल समकित रूपी फल, परिणाम रूपी डालीथी समकित रूपी फल टुटो ते मिथ्यात्व रूपी धरती ता आव्यो तेहने सास्वादन गुणठाणो कहिये त्यारे श्री गोतमस्वामी पूछता हवा स्वामीनाथ एहने शुं गुण निपन्यो त्यारे श्री भगवंतजी बोल्या अहो गोतम गुण ए निपन्यो कृष्णपक्षनो शुक्ल पक्ष थयो

अर्ध पुद्गल भोगवानो रह्यो अर्धा रुपयानोदृष्टांत जेम कोई पुरुष क्रोड़ रुपयानो देवादार हतो ते नवाणुं लाख नवाणुं हजार नवसे साड़ा नवाणुं दीधा अर्धा रुपयो रह्यो । हवे त्रीजा गुणठाणानो लक्षण कहे छे । त्रीजो मिश्र गुणठाणो तेहनो दृ-ष्टांत जेहवो श्रीखंडनो स्वाद मीठा समान तो समकित अने खाटा समान तो मिथ्यात्व अथवा अनादि कालनो उलटो हतो तेहनो सुलटो थयो समकित सामो बेठो पण पग भरवा समर्थ नहीं तेहने मिश्रगुणठाणो कहिये त्यारे श्रीगोतमस्वामी पूछता हवा स्वामीनाथ एहने शुं गुण निपन्यो त्यारे स्वामीनाथ बोल्या गुण एह निपन्यो अनादि कालनो कृष्ण पक्ष हतो तेहनो शुक्ल पक्ष थयो अर्ध पुद्गल भोगवणा रह्या अधेलीनो दृष्टांत जा-णवो । हवे चोथा गुणठाणानो लक्षण कहे छे । तेहनी प्रकृति (७) अनुतानुबांध्यो क्रोध१, मान२, माया ३, लोभ ४, मिथ्यात्व मोहनी ५, मिश्र

मोहनी ६, समकित मोहनी ७, तेहना भांगा नव पहिले भांगे आगली ४ प्रकृति खपावे ३ प्रकृति उपसमावे तेहने खयोउप समकित कहिये । बीजे भांगे आगली ५ प्रकृति खपावे २ उपसमावे तेहने खयोपसम समकित कहिये । त्रीजे भांगे आगली ६ प्रकृति खपावे १ उपसमावे तेहने उपसमकित कहिये । चोथे भांगे आगली ४ प्रकृति खपावे २ उपसमावे १वेदें तेहने खयोपसम वेदक समकित कहिये । पांचमें भांगे आगली ५ प्रकृति खपावे १ उपसमावे १ वेदें तेहने खयोपसम वेदक समकित कहिये । छठ्ठे भांगे आगली ६ प्रकृति उपसमावे १ वेदें तेहने उपसम वेदक समकित कहिये । सातमें भांगे आगली ६ प्रकृति खपावे १ वेदें तेहने खाहक वेदक समकित कहिये । आठमेंभांगे प्रकृति ७ उपसमावे तेहने उपसम समकित कहिये नवमें भांगे ७ प्रकृति खपावे तेहने खायक समकित कहिये । त्यारे चोथे गुणठाणा आवे जिवादिक

नव पदार्थनो जाण हुवे। द्रव्यथकी १, खेत्रथकी२, कालथकी ३, भावथकी ४, नोकारसी आदि देई वरसी तप सरदवो। त्यारे श्री गोतमस्वामी पूछता हुवा स्वामीनाथ एहनो शुं गुण नीपन्यो त्यारे श्रीभगवंत देवजी वोल्या अहो गोतम गुण ए नीपन्यो नरक गतिनु आऊखो १, तीर्यंच गतिनुं आउखो २, स्त्री वेद ३, नपुंसक वेद भवनपतिनो योतिषी व्यंतर आउखो ७, ए सात समकितमांहीं नवु न वांधे ॥ ४ ॥ हवे पांचमु देशवृती गुणठाणा नो लक्षण कहे छे। पांचमों देशवृती तेहनीप्रक्रती ग्यारह सातती पहिले कही ते अने प्रत्यानुवंधी क्रोध १, मान २, माया ३, लोभ ४, एम ११-प्रक्रती खयोपसम करे त्यारे पांचमु गुणआवे जीवादिक नव द्रव्य थकी ४ नोकारसी आदि देई वरसी तप सरदवो शक्ति परिणामें करनें त्यारे श्रीगोतमश्वामी पूछता शुं गुण निपन्यो गुण ए निपन्यो जघन्य तो त्रीजे भवे मोक्ष जाय उत्कृष्टो

सात आठ भव करी मोक्ष जाय हवे। छठो गुण-
ठाणानो लक्षण कहे छे तेहनी प्रकृती १५ इग्यारे
पाछे कही ते, अप्रत्याख्यानी क्रोध १, मान २,
माया ३, लोभ ४, एम १५, प्रकृती खयोपसम करे
त्यारे छठे गुणठाणे आवे जीवादिक नव पदार्थ
नो जाण हुवो द्रव्य थकी जावजीव थकी नोका-
रसी आदि देई वरसी तप सरदवो शक्ति प्रमाणे
करवो त्यारे श्री गोतमश्वामी कहता हुवा एनो
गुण एह निपन्यो जघन्यतो एहीजभवे मोक्ष जाय
उत्कृष्टो सात आठ भव करी मोक्षजाय। हवे सात
मा गुणठणानो लक्षण कहे छे प्रकृती १५, पाछे
कहीते खयोपसम एटलो विशेष मद विष कसाय
निंदा विगहा ए पंच भणी परमाद जीव पडंती
संसारे ए पांच प्रमाद छांडे त्यारे सातमे गुणठाणे
आवे जीवादिक नव पदार्थनो जाण नोकारसी
देई वरसी तप करे त्यारे श्री गोतमश्वामी पूछता
हवा उत्तर जघन्य एहीज भवे मोक्ष जाय अथवा

सात आठ भवकरी मोक्ष जासी, हवे आठमुं गुणठा-
णानु लक्षण कहे छे अपूर्व करणने शुक्लध्यान
आवे त्यारे आठमें गुणठाणे आवे तिहा श्रेणी बे
एक उपसम श्रेणी बीजी क्षायक श्रेणी हवे उपसम
श्रेणीना लक्षण कहेछे तेहनी प्रकृती २१, तेएम १५
पाछे कही ते हास्य १, रती २, अरति ३, भय ४,
सोग ५, दुगंछा ६, एम २१ प्रकृति उपसमावे त्यारे
नवमें गुणठाणा आवे । हवे दसमु गुणठाणा नो
लक्षण कहे छे तेहनी प्रकृति २७ तेएम २१ तो पाछे
कही ते स्त्री वेद १, पुरुप वेद २, नपुंसक वेद ३,
संजलनो क्रोध १, मान २, माया ३, एम २७ प्र-
कृति उपसमावे त्यारे दसमें गुणठाणे आवे तिहां
काल करे तो ४ अनुत्तरविमान माहीज जावे काल
नही करे तो संजलनो लोभ हतो ते उपसमावीने
इग्यारमें गुणठाणे आवे तिहां काल करे तो स्वार्थ
सिद्धी जाय काल न करे तो पाछो लड्यड़े इग्या-
रमानो दसमे तथा नवमे तथा चौथे तथा पहिले

गुणठाणे आवे त्यारे श्री गोतमस्वामी पुछता हवा ए पाछो पड्यो ते स्या थकी श्री भगवंतदेवजी बोल्या ए मोहनी कर्म संजलनो लोभ उपसमायो हतो ते पाछो प्रजल्यो अग्निने दृष्टांते जेम अग्नि मांहें इंधन भारया आव्या ते जलवट उठी तेम मोहनी कर्म उपसमाव्यो हतो ते पाछो प्रजल्यो। क्षायक श्रेणीना लक्षण कहेछे वेहीज २१ प्रकृति खपावे तो नवमे गुणठाणे आवे वेहीज २७ प्रकृति खपावे तो दसमें गुणठाणे आवे इहां संजलनो लोभ हतो ते खपावीने इग्यारमुं गुणठाणों उलांगी ने बारमें गुणठाणें आवे तिहां वनघातिया कर्म ज्ञानावरणी १, दर्शनावरणी २, अंतराय ३, एतीन कर्म खपावीने तेरमें गुणठाणें आवे तिहां १० बोल नी प्राप्ती होवे दान लब्दी १, लाभ लब्दी २, भोग लब्दी ३, उपभोग लब्दी ४, वीर्य लब्दी ५, केवलज्ञान लब्दी ६, केवलदर्शन लब्दी ७, क्षायक समकित लब्दी ८, यथाख्यात चारित्र लब्दी ९,

शुक्लध्यान लब्दी १०, एम १० बोल सहित १४ गुणठाणे आवे इहां चारी अध्यात्मकर्म क्षय करीने निर्वाण जाय ॥ इति लक्षण द्वार संपूर्ण ॥ २१ ॥

हवे स्थिती द्वार लिख्यते । पहिला गुणठाणानी स्थिती तीन प्रकारनी अभवी आसरी अनादी अनत भवी आसरी अनादी सान्त पड़वाई समदृष्टि जाणवो तेहनी स्थिती जघन्य अन्तर मुहुर्त उत्कृष्टो अर्ध पुद्गल देश उणो१, बीजा गुणठाणानी स्थिती जघन्य १ सम्योत्कृष्टि ६ आवलिकानी स्थिती त्रीजा गुणठाणानी स्थिती जघन्य उत्कृष्टि अन्तर मुहुर्तनी चोथा गुणठाणानी स्थिती जघन्य अन्तर मुहुर्त उत्कृष्टी ६६ सागर झाझेरी पांचमा छठा तेरमा गुणठाणानी स्थिती जघन्य अन्तर मुहुर्त उत्कृष्टो १ कोडी पूर्व देश उणी सातमा गुणठाणासु मांडीने इग्यारमा गुणठाणा सुधी जघन्य एक सम्यो उत्कृष्टो अन्तर मुहुर्त बारमा गुणठाणानी स्थिती जघन्य उत्कृष्टी अन्तरमुहुर्तनी चवदमा

गुणठाणानी स्थिती पांच लघु अक्षरनी । अ, इ, उ, ऋ, ऌ, । इति स्थिती द्वार संपूर्ण ॥ ३ ॥

हवे क्रियाद्वार लिख्यते । मूल क्रिया ५ मिथ्यात्वकी १ अपचणावरणी २ परिग्रीया ३ आरंभिया ४ मायावतिया ५ पाहिले गुणठाणे क्रिया पांच लागे बीजे तीजे चोथे गुणठाणे क्रिया ४ लागे मिथ्यात्व न लागे पांचमे गुणठाणे क्रिया ३ लागे अपच्चखाण नी न लागे छठे गुणठाणे क्रिया २ लागे परिग्रह न लागे सातमा गुणठाणाथु मांडीने दसमागुणठाणा सुधी १ मायावतीया लागे इग्यारमे बारमे तेरमे गुणठाणे १ इरिया वहिया नी क्रिया लागे पहिले समे लागे बीजे समे वेदे त्रीजे समे निर्जरे चवदमे गुणठाणे क्रिया न लागे इति क्रियाद्वार सपूर्ण ।४

हवे सत्ता द्वार लिख्यते । पहिला गुणठाणा मांडीने इग्यारमा गुणठाणा सुधी आठकर्म नी बारमा गुणठाणा सात कर्म नी सत्ता मोहनी तेरमे चवदमे गुणठाणे ४ अघातिया कर्मनी

वेदनी १, आयु २, नाम ३, गोत्र ४, इति स. सं.

हवे बंधद्वार लिख्यते । पहिला गुणठाणासुमांडी ने त्रीजोगुणठाणो वरजीने सातमा गुणठाणासुधी आठ कर्म बांधे तथा सात बांधे तो आयु न बाधे त्रीजे आठमें नवमे गुणठाणे७कर्मबाधे आयु न बांधे दसमे गुणठाणे ६ कर्म बांधे मोहनी न बांधे इग्यार मे बारमे तेरमे गुणठाणे १ साता वेदनी नो बांधे चवदमे गुणठाणे अनंध। इति बंध द्वार संपूर्ण ॥६॥

हवे उदे द्वार लिख्यते । पहिला गुणठाणाथी मांडीने दसमा गुणठाणा सुधी आठ कर्म नो उदे इग्यारमे बारमे गुणठाणे सात कर्म नो उदे मोहनी नथी तेरमे चवदमे गुणठाणे चार अघात्या कर्मनो उदे । इति उदे द्वार संपूर्ण ॥

हवे उदीरणा द्वार लिख्यते । पहिला गुणठाणा थी मांडीने त्रीजे गुणठाणो वरजी छठा गुणठाणा सुधी आठ कर्म नी उदीरणा अथवा सात कर्म नी उदीरणा आयु वर्ज्यो त्रीजे गुणठाणे आठ कर्म नी

उदीरणा सातमे आठमे नवमे ६ कर्म नी उदीरणा आयु वेदनी वरज्यो दसमे गुणठाणे ६ कर्मना उदीरे एहीज उदीरतो मोहनी वरज्यो इग्यारमे गुणठाणे ५ उदीरतो एहीज बारमे गुणठाणे ५ उदी- रतो एहीज अथवा २ उदीरतो नाम १ गोत्र २ तेरमे गुणठाणे २ उदीरतो नाम गोत्र २ उदीरे नहीं चवदमे गुणठाणे उदीरे नथी। इति उदीरणाद्वार सं.

हवे निर्जरा द्वार लिख्यते पहिला गुणठाणासु मांडीने दसमा गुणठाणा सुधी आठ कर्मनी निर्जरा इग्यारमे बारमे गुणठाणे ७ कर्मनी निर्जरा मोहनी वरज्यो तेरमे चवदमे गुणठाणे ४ अघात्याकर्मनी निर्जरा। इति निर्जराद्वार संपूर्ण ॥

हवे भाव द्वार लिख्यते। मूल भाव उदे १ उपसम २ भव क्षयोपसम ३ क्षायक ४ परिणामिक ५ हवे पहिले बीजे त्रीजे गुणठाणे भाव ३ लाभे उदे १ उपसन २ भवक्षयोपसम ३ खायक ४ परिणामिक ५ हवे पहिले बीजे तीजे गुणठाणे भाव ३ उदे १

खयोपसम २ परीणामिक ३चोथागुणठाणाथु मांडी इग्यारमा गुणठाणा सुधी भाव लाभेबारमेगुणठाणे भाव ४ लाभे उपसम वरज्यो तेरमे चवदमेगुणठाणे भाव ३ लाभे उदे भाव १ क्षायक २ परिणामिक सिद्ध मे भाव २ लाभे क्षायक १ परिणामिक २ इति भावद्वार सपूर्ण ॥

हवे कारण द्वार लिख्यते । कारण ५ मिथ्यात्व१ अव्रत२ प्रमाद ३ कषाय ४ अशुभजोग ५ पहिले गुणठाणे कारण ५ लागे त्रीजे २ गुणठाणे वीजे ३ गुणठाणे चोथे गुणठाणे लागे मिथ्यात्व नरयो पांचमे छठे गुणठाणे कारण ३ लागे अव्रत टल्यो सातमां गुणठाणाथुं मांडी दसमा गुणठाणा सुधी कारण २ लागे परमाद टल्यो इग्यारमे बारमे तेरमे गुणठाणे कारण १ जोग लागे चवदमे गुणठाणे कारण नथी । इति कारण द्वार संपूर्ण

हवे परिसा द्वार लिख्यते । सुधा परिसो १ पिवासा२ सीत३ उष्ण४ दंस५ अचेलपरीसा६ रति

परीसा७ स्त्री८चरिया९नीसिया१० सज्झा११अक्रोस१२ बंध१३ जायणा१४ अलाभ १५ रोग१६ तणफासा१७ मल १८ सत्कार १९ प्रगन्या २० आगन्या २१ दर्शन ॥ २२ ॥ चारित्र कर्म थकी परीसा उपजे ज्ञानवरणी कर्म ॥ २ ॥ परीसा उपजे ॥ २० ॥ ११–१३–१५–१७–१९ ॥ २१ ॥ वेदनी कर्म थकी ॥ ११ ॥ परीसा उपजे १२ –३–४-५–९ मोहनी कर्म थी ८ परीसा उपजे दर्शन मोहनीथी १परीसा उपजे ॥ २२ ॥ मो चारित्र मोहनी थी ७ परीसा उपजे ॥ ६-७-८-१०-१२-१४-१९ ॥ एवं ७ ॥ अंतराय कर्म थी १५ परीसा उपजे एवं ४ कर्म थी २२ परीसा उपजे ॥ पहिला गुणठाणासुं मांडीने नवमा गुणठाणा सुधी २२ परीसा उपजे ते मांही २० वेदे २ न वेदे सीत होवे तिहां उष्ण नहीं उष्ण होवे तिहां सीत नहीं ॥१॥ चरिया होवे तिहां निसिया नथी निसि होवे तिहां चरिया नथी ॥ २ ॥ दसमे इग्यारमे बारमे गुणठाणा १४ परीसा उपजे ॥ इहां

मोहनी ८ टल्या ते मांहे १० वेदे २ न वेदे सीत होवे तिहां उष्ण नहीं ॥ १ ॥ चरिया तिहां सज्झाय नथी सज्झाय तिहां चरिया नथी॥२॥ तेरमे चउदमे गुणठाणे परीसा ११ उपजे ज्ञानावरणी २ अतरायनो १ एवं ३ वरजा ११ माहीं ९ वेदे २ न वेदे इति परीसा द्वार संपूर्ण ।

हवे आत्मा द्वार लिख्यते। आत्मा ॥ ८ ॥ द्रव्य आत्मा १ कषाय २ जोग ३ उपयोग ४ ज्ञान ५ दर्शन ६ चारित्र ७ वीर्य आत्मा ८ पहिले त्रीजे गुणठाणे आत्मा ६ लाभे ज्ञान १ चारित्र नथी २ बीजे गुणठाणे चौथे गुणठाणे ७ लाभे चारित्र नथी ५ गुणठाणाथु मांडीने दशमा गुणठाणा सुधी आत्मा ८ इग्यारमे बारमे तेरमे गुणठाणे७ आत्मा लाभे कषायनथी चउदमें गुणठाणे आत्मा ६ लाभे जोग नथी सीद्धजी में आत्मा ४ लाभे अथवा ६ लाभे ॥ इति आत्मा द्वार संपूर्ण ॥

हवे जीवना भेद द्वार लिख्यते। जीवनाभेद१४

५ मनणी १ सर्व १२ एम १७ जोग १५ कसाय २५ सोले कसाय नोकसाय सर्व मिली हेतु ५७ पहिले गुणठाणे हेतु ५५ लाभे आहरक १ आहारीक मिश्र २ जोगटल्या बीजे गुणगणे हेतु ५० लाभे ५ मिथ्यात्व टल्या त्रीजे गुणाठाणे हेतु ४३ लाभे अनंतानु त्रंधी चोकडी टल्यी उदारीकनो मिश्र १ वे क्रियनो मिश्र २ कारमण ३ एम जोगटल्या चोथे गुणठाणे हेतु४६ लाभे३ जोग पाछा आव्या पांच मे गुणठाणे हेतु ३९ लाभे आप्रत्याख्यानी चोकडी टली त्रसनी अव्रत टली कार्मण जोग उदारीक मिश्र नोटल्या। छटे गुणठाणे हेतु २६ लाभे ११ आव्रतटल्या प्रत्यख्यानी चोकडी टली आहारक आहारकनो मिश्र २ जोग पाछा आव्या सातमे गुणठाणे हेतु २४ लाभे २ मिश्र जोग टल्या आठमे गुणठाणा हेतु २२ लाभे आहारक१ वेक्रीय २ जोग टल्या नव मे गुणठाणे हेतु १६ लाभे ६ हास्यादिक टल्या। दशमे गुणठाणे हेतु१०

लाभे संजलनो क्रोध १ मान २ माया ३ स्रीवेद ४ पुरुषवेद ५ नपुसकवेद ६ एवं ६ टल्या इग्यारमे बारमे गुणठाणे हेतु ९ लाभे जोग संजलनो लोभ टल्यो तेरमे गुणठाणे हेतु ७ लाभे ते जोग ७ चवदमें गुणठाणे कर्म बधनो हेतु नथी। इति सं० हवे मार्गणा द्वार लिख्यते। पहिलागुणठाणे मार्गणा ४ पहिलानो तीजे चोथे पांचमे सातमे गुणठाणेआवे १ बीजे गुणठाणे मार्गणा बीजानो पहिले गुणठाणे आवे २। त्रीजे गुणठाणे मार्गणा ४ त्रीजानो पहिले चोथे पांचमे सातमे गुणठाणे आवे ३ चोथे गुणठाणे मार्गणा५ चोथाना त्रीजे बीजे पहिले पांच मे सातमे गुणठाण आवे ने जाय ४। पांचमा गुणठाणे मार्गणा ५ पांचमानु चोथे त्रिजे बीजे पहिले सातमे गुणठाणे जाय ५ छठे गुणठाणे मार्गणा ६ छठानो ५४३२-१ सातमे गुणठाणे जाय ६ सातमे गुणठाणे मार्गणा ३ सातमानो ६८-९-१० आवे काल करेतो चोथे गुणठाणे जाय। आठमा

गुणठाणे मार्गणा ३ नवमे मार्गणा ८ दसमे गुण-
ठाणे मार्गणा ४ दसमानो ९-११-१२ काल करे तो
चोथे गुणठाणे आवे इग्यारमा गुणठाणे मार्गणा २
११-१० काल करे तो चोथे गुणठाणे आवे ११
बारमानो तेरमे तेरमानो चवदमानो काल करे तो
चोथा गुणठाणे जाय । इति मार्गणा द्वार संपूर्ण।

हवे ध्यान द्वार लिख्यते । ध्यान ४। आरत १
रोद्र २ धर्म ३ शुक्ल ४ पहिले बीजे तीजे गुणठाणे
ध्यान २ आर्त १ रुद्र २ चोथे पांचमें गुणठाणे
ध्यान ३ आर्त १ रुद्र २ धर्म ३ छठे गुणठाणे
ध्यान २ सातमा गुणठाणा सु.मांडीने चवदमा
गुणठाणा सुधी ध्यान १ शुक्लध्यान १ इति ध्यान
द्वार सम्पूर्ण.

हवे दंडक द्वार लिख्यते ॥ दंडक २४ पहिले
गुणठाणे दंडक २४ लाभे बीजे गुणठाणे दंडक
१९ लाभे थावरना टल्या त्रीजे चौथे गुणठाणो
दंडक १६ लाभे ३ विकलेंद्री नाटल्या पांचमें गुणठाणे

दडक २ लाभे मनुष्य १ तिर्यच २ छटा गुणठाणासु माडी चवदमा गुणठाणा सुधी१ मनुष्यनो दडक १। इति दडक द्वार सपूर्ण २१

हवे जीवा जोनी द्वार लिख्यते। पहिले गुणठाणे ८४००:०० लाख जीवा जोनी लाभे बीजो गुणठाणे ३२००००० लाख लाभे ५२ एकेंद्रीनी टली त्रीजे गुणठाणे चोथे गुणठाणे २६००००० लाभे जीव लाभे ६ विकलेंद्रीनी टली पाचमां गुणठाणे १८०००० जीव लाभे ८ देवता नारकी टली छठा गुणठाणासु मांडी चवदमां गुणठाणासुधी १४००००० लाख मनुष्यनी जोनी लाभे। इति जीवाजोनी स.

हवे संतर द्वार लिख्यते। सतर कहता आंतरो पडतो पहिले गुणठाणे केटलो पडे जघन्य अन्तर मुहुर्तनो उत्कृष्टी ६६ सागर झाजेरो बीजा गुण ठाणासु मांडी इग्यारमा गुणठाणा सुधी आंतरो जघन्य अन्तर मुहरतनुं उत्कृष्टो अर्ध पुद्गल देशे उणो बारमे तरमें छुटो ते छुटो फेर पाछो न आवे

नीरंतर कहता जेटली अपाप गुणठाणानी स्थीती-
छे तेटला काल त्यां रहे इति सतरद्वार सम्पूर्ण ॥

हवे अल्पा बहुत्वद्वार लीख्यते सर्वथी थोडा
ग्यारमा गुणठाणाना धणी तेथी बारमें गुणठाणा
वाला संख्यातगुणा तेथी आठमा नवमा दसमाना
धणी माहों माहें समतुल्य तेथी बारमा गुणठा-
णाना धणी विशेष अधिक तेथी तेरमां गुठाणाना
संख्याता गुणा तेथी सातमा गुणठाणाना धणी
संख्याता गुणा तेथी छटा गुणठाणाना धणी
संख्याता गुणा तेथी पांचमा गुणठाणाना धणी
असंख्यता गुणा तीर्यंच में सावग घणा तेमाटे
तेथी त्रीजा बीजा गुणठाणाना धणी असंख्याता
गुणा विकलेंद्रीनी अपेक्षाथी तेथी तीजा गुणठाणा
ना धणी असंख्याता गुणा देवता नारकीनी
अपेक्षा थी तेथी चौथा गुणठाणाना धणी असं-
ख्याता गुणा स्थीती घणी तेमाटे तेथी चवदमा
गुणठाणाना धणी अनंत गुणा सिद्धनी अपेक्षाथी

तेथी पहिला गुणठाणाना धणी अनंत गुणा नीगोदीया जीव नी अपेक्षा थी ॥ इनी अल्पा बुहुत्व द्वार सम्पूर्ण ॥

॥ लघु संग्रहणीनो यत्र ॥

(जंबु द्वीप लाख जोजननो)

एक खांडनानु भरत क्षेत्र छे ते भरत क्षेत्र केवड्डु छे ५२६ जोजनने ६ कलानो छे ५०० को १०० से गुणाकऱ्या तो ५०००० हजार थया ५०० को ९० से गुणाकऱ्या तो ४५००० हजार थया २५ जोजनको १०० से गुणाकऱ्या तो २५०० थया २५ जोजन को ९० गुणाकऱ्या तो २२५० थया १ जोजनको १०० से गुणाकऱ्यातो १०० थया. १ जोजनको ९० गुणाकऱ्यातो ९० थया ६ कला को १०० गुणाकऱ्यातो ६०० थया ६ कलाको ९०

गुणाकर्‍यातो ५४० थया १९ कलानुं एक जोजन
९५ कलाना ५ जोजन थया ६०० कलाना ३०
जोजन थया अने ३० कला वधी ५०० कलाना
२५ जोजन थया अने २५ कला वधी ३० कला
२५कला ४०कला सर्वे भेगीकरी त्यारे ९५कला थया
तेना५जोजनथया सर्वमलीने६०जोजनथया सर्वेनो
आंखभेगोकरता लाख जोजननो जंबुद्वीप थयो.
१९० खांडवा पेला पासाना ६३ खांडवा.

१. खांडवानुं भरत क्षेत्र.
२. खांडवानुं हिमवंत पर्वत.
४. खांडवानुं हिमवंत क्षेत्र.
८. खांडवानुं महा हिमवंत पर्वत.
१६. खांडवानुं हरण्य क्षेत्र
३२. खांडवानुं निषध पर्वत ए सर्वे मलीने ६३
खांडवा थया.

बीजा पासाना.

१. खांडवानुं एरावत क्षेत्र.

२. खांडवानुं शिखरी पर्वत.
४. खांडवानुं हरण्यवत क्षेत्र.
८. खांडवानुं रुपी पर्वत.
१६. खांडवानुं रम्यक् क्षेत्र.
३२. नलिवत पर्वत ए बे ६३ खांडवा जांणावा
६४. खांडवानुं महाविदेह क्षेत्र. ए सर्वे भेगा करता १९० खांडवा थया.

२ लाख १६ हजार २२७ जोजन ३ कोस १२८ धनुष १३॥ अंगुलनो गुणा करावा.

२ लाखने १०० से गुणाकऱ्या तो २ क्रोड थया
२ क्रोडने १० से गुणाकऱ्या २० क्रोड थया.
३० क्रोडने २५ से गुणाकऱ्यातो ७५० क्रोड थया.
१६ हजार १०० से गुणाकऱ्या १६ लाख थया.
१६ लाखने १० से गुणाकऱ्यातो १ क्रोडने ६० लाख थया.
१ कोडने २५ से गुणाकऱ्यातो २५ क्रोड थया.
६० लाखने २५ से गुणाकऱ्यातो १५ क्रोड थया.

२ सौने १०० से गुणाकऱ्यातो २० हजार थया.
२० हजार १० से गुणाकऱ्यातो २ लाख थया.
२ लाखने २५ से गुणाकऱ्यातो ५० लाख थया.
२७ ने १०० से गुणाकऱ्यातो २७०० सौ थया.
२७ सौने १० से गुणाकऱ्यातो २७ हजार थया.
२७ हजारने २५ से गुणाकाऱ्यातो ६७५००० थया.
३ कोसने १०० से गुणाकऱ्यातो ३ सौ कोस
थया. तेना ७५ जोजन थया.
७५ जोजनने १० सेगुणाकऱ्यातो ७५० जोजन
थया.
७५० जोजनने २५ से गुणाकऱ्यातो १८७५० जो-
जन थया.
२८ धनुषने १०० से गुणाकऱ्यातो २८ सौ थया.
२८ सौ धनुषने १० गुणाकऱ्यातो २८ हजार धनुष
थया.
२ हजार धनुषनो एक कोस थाय. अने चार
कोसनो एक जोजन थाय. २८ हजार

धनुषनो ३॥ जोजन थया ३॥ जोजनने २५ से गुणाकऱ्याती ८७॥ जोजन थया १०० धनुषने १०० से गुणाकऱ्याती १० हजार थया दस हजारनां ५ कोस थया.

५ कोसने १० से गुणाकऱ्याती ५० कोस थया तेना जोजन १२॥ थया.

१२॥ जोजनने २५ से गुणाकऱ्याती ३१२॥ जोजन थया.

१३॥ अंगुलने १०० से गुणाकऱ्याती १३५०० अगुल थया.

१३५०० अगुलने १० सुं गुणाकऱ्या ती १३५००० अगुल थया.

१३५००० अंगुलनां १४० धनुष अने ६० अंगुलथया.

१४० अगुलने २५ से गुणाकऱ्याती ३५०० धनुष थया. हजार धनुष नो एक कोस अने पन्नरसो धनुष थया.

६० अंगुलने२५से गुणाकऱ्याती१५००अंगुलथया.

९६ अंगलनो एक धनुष १५०० अंगुलना १५ धनुषने ६० अंगुल थया सर्वनो आंकडो भेगो कऱ्योतो ७०० क्रोड ९० क्रोड ५६ लाख ९४ हजार १५० जोजन १ कोस १५१५ धनुष अने ६० अंगुल थया नानी संघरणी नो गणी पद. इति समास ॥

हवे पर्वत.

३८ वैताढ्य पर्वत तेमा चार वाटला आकारे ३४ लांबाछे १६ वखारा पर्वतछे एक चीत्र अने बीजो विचीत्र एक जमग अने बीजो समग बे पर्वतछे २०० कंचन गीरीछे गजदंता पर्वत तेमा १ सुमेरू ६ वर्षधर पर्वतछे ए सर्व इकठा करता २६९ थयाछे.

हवे कुटनी गीनती.

१६ वखारा पर्वतने विशे चार २ कुट एकंदर ६४ कुट थया.सोमनस अने गंध मादन तेने वीशे सात २ कुट अने रूपी, तथा महा हीमवंत पर्वत

ए बे पर्वतने विशे आठ २ कुट सर्वे मलीने ९४ थया. ३४ वैताढ्य पर्वत ए बे पर्वत ग्रिहुत पर्वत नीशेध पर्वत नीलवत पर्वत मालगीरी पर्वत सूरगिरी पर्वत ए ३९ पर्वतने विशे नव २ कुट सर्वे मली ३५१ थया.

हीमवंतपर्वत अने शिखरीपर्वत एबे पर्वतनोविशे ग्यार २ कुट सर्वनो आंख भेगो करता ४६७ कुट थया ३४ विजयने विशे ३४ रिशभ कुट छे तथा मेरु-पर्वत, जंबुवृक्ष अने देवकुरु क्षेत्र ए त्रणने विशे आठ २ कुट सालिवृक्ष मध्येना हरिकुट अने हरीशी कुट ए सर्वे मलीने ६० भुमीकुट थया.

हवे १०२ तीर्थ लिख्यते.

मागद तीर्थ, वरदांम तीर्थ, प्रभास तीर्थ ए तीन तीर्थ ३२ विजय तथा भरत ऐरावत ए ३४ ने विशे तीन २ तीर्थ होय सर्व मलीने १०२ तीर्थ थया.

हवे १३६ श्रेणी लिख्यते.

विद्याधर अने अयोगी देवतानी ३४ वैताढ्य पर्व-
तनेविंशे चार२ श्रेणीछे ३४ ने चार सुं गुणा करतां
१३६ श्रेणी थाय.

हवे नदियों १४५६००० लखीयेछे

गंगा सींधु रक्ता ने रक्तवती ए चार नदीयोंने
विशे प्रत्येके २ चौद २ हजार नदीयोनो परीवार
छे सर्वे मलीने ५६००० नदियो थयी हीमवंत अने
एरावत ए बे क्षेत्रनी रोहीता रोहीतासा रूपकला
स्वर्णकला ए चार नादियोने प्रत्यक२ अठावीस२
नादियोनो परीवार हरिवर्ष रम्यक क्षेत्रनी हरी-
कंता हरीशलीला नरकंता नारीकंता ए चार न-
दियोने प्रत्येक २ छपन २ हजार नादियो नो
परिवार छे देव करुने उत्तर करु मा ६ द्रह तेना
नाम पद्म महापद्म पुण्डरीक महा पुण्डरीक ती-
गीरछ अने केसरी ए ६ द्रहनी ६ नादियोने विशे
१ चौद२ हजारनो परिवार सर्वथईने ८४००० थई.

पछीम महा विदेहनी सोल वीजय तेमा वत्री सनदियों तेने प्रत्येके २ चोदे २ हजारनो परीवार सर्वे चार लाख ४८ हजार नदियों थई सर्वे नो आख भेगो करता सीता नदिमा पांच लाखने वत्रीस हजार नदीयो थई अने सीतोदा नदी मा पांचलाख ने वत्रीसहजार नदीयो नो परिवार सर्वे नदीयोनो परिवार भेगो करता चौदेलाख ने ५६ हजार नदियों थई.

॥ वासठ मार्गणा ए ५६३ भेद जीवना लखियेछे ॥

---

१९८ देवता नी गती १५ परमाधामीना १० भुवन पतीना १६ वाणव्यतर ना १० तिर्यग ज्रभक ना १० जोतीपीना १२ देवलोकना ३ कि-ल्वीपीया ना ९ लोकांतिक ना ९ नवग्रैवेग ना ५ अनुत्तर विमाना एकठा ९९ पर्याप्ता ९९ अपर्या-प्ता मिलाकर १९८ भेद थया.

३०३ मनुष्यनी गती १५ कर्मज भुमी तेएम ५ भरत ५ ऐरावत ५ महाविदेह मिलकर १५ भेद ३० अकर्मज भुमि ते एम ५ हेमवंत ५ ऐरण्यवंत ५ हरिवर्ष ५ रम्यक ५ देवकुरु ५ उत्तरकुरु मिलकर ३० भेद ५६ अंतरद्विप मिलकर १०१ पर्यासा १०१ अपर्यासा १०१ समुर्छिम मिलकर ३०३ भेद.

४८ तिर्यंच नी गती २२ एकेंद्रीना ६ विगलेंद्रीना २० पचेंद्री तिर्यंचना एम ४८ भेद.

१४ नरकनी गती ७ नारकी पर्यासी ७ अपर्यासी एम १४ भेद.

२२ एकेंद्रीनी मार्गणा ए ४ पृथ्वीकाय ४ अपकाय ४ तेउकाय ४ वाउकाय ६ वनस्पती काय एम २२ भेद.

२ बेइंद्री मार्गणा ए १ पर्यासा १ अपर्यासा एम २ भेद.

२ तेइंद्रीनी मार्गणा ए १ पर्यासा १ अपर्यासा एम २ भेद.

२ चौरींद्रीनी मार्गणा ए १ पर्याप्त १ अप र्याप्ता एम २ भेद.

५३५ पंचेंद्रीनी मार्गणा ए १९८ देवताना ३०३ मनुष्यना.

२० तिर्यंच पंचेंद्रीना १४ नारकीना एम ५३५ भेद.

४ पृथ्वी कायनी मार्गणा एम १ सुक्षम १ बादर २ पर्याप्ता २ अपर्याप्ता मिलकर ४ भेद.

४ अपकायनी मार्गणा एम सुक्षम १ बादर २ पर्याप्ता २ अपर्याप्ता मिलकर ४ भेद.

४ तेउकायनी मार्गणा एम १ सुक्षम १ बादर २ पर्याप्त २ अपर्याप्ता मिलकर ४ भेद.

४ वाउकायनी मार्गणा एम १ सुक्षम १बादर २ पर्याप्ता २ अपर्याप्ता मिलकर ४ भेद.

६ वनस्पतीनी मार्गणा एम २ प्रत्येक वन स्पती काय १ पर्याप्ता १ अपर्याप्ता २ भेद.

४ साधारण वनस्पती काय ते एम १ सुक्षम

१ बादर २ पर्यांप्ता २ अपर्यांप्ता मिलकर ४ भेद.

५४१ त्रसकायनी मार्गणा एम १९८ देव-ताना ३०३ मनुष्यना २० तिर्यंच पेचेंद्री १४ नार-कीना ६ विगलेंद्रीना एम मिलकर ५४१ भेद.

२१२ मनयोगनी मार्गणा एम ९९ देव-ताना पर्यांप्ता १०१ मनुष्यना पर्याप्ता ५ तिर्यंच पेचेंद्रीना पर्याप्ता ७ नारकीना पर्यांप्ता मिलकर २१२ भेद.

२२० वचन योगनी मार्गणा एम कि २१२ मनयोगवाला अने ५ तिर्यंच पेचेंद्री असंनीना पर्याप्ता ३ विगलेंद्रीना पर्यांप्ता एम २२० भेद.

५६३ काया योगनी मार्गणा ए सर्व याने ५६३ भेद.

४१० पुरुष वेदनी मार्गणा एम १९८ देव-ताना २०२ मनुष्यना पर्यांप्ता १०१ अपर्याप्ता १०१ मिलकर २०२ भेद १० तिर्यंच पेचेंद्रीना गर्भज पर्याप्ता अपर्याप्ता १०भेद सर्व मिलकर ४१० भेद.

३४० स्त्रियों वेदनी मागर्णा एम १२८देवताना १५ परमाधामीना १० भुवनपतीना १६ वाणव्यंतरना १० तिर्यगज्रंभकना १० जोतिषीना ३ किल्विषियाना २ देवलोकना एम ६४ पर्याप्ता ६४ अपर्याप्ता मिलकर १२८ भेद २०२ गर्भज मनुष्यना १० गर्भजतिर्यंचपंचेंद्रीना एम ३४० भेद

१९३ नपुंसक वेदनी मार्गणा एम १४ नारकीना ४८तिर्यंच पचेंद्रीना १०१ समुर्छिममनुष्यना ना ३० कर्मभूमिना पर्याप्ता अपर्याप्ता मिलकर १९३ भेद.

५६३ क्रोधनी मार्गणा ए ५६३ भेद.

५६३ माननी मार्गणा ए ५६३ भेद.

५६३ मायानी मार्गणा ए ५६३ भेद.

५६३ लोभनी मार्गणा ए ५६३ भेद.

४२३ मतिज्ञाननी मार्गणा ए १३ नारकीना सातमी नरकना अपर्याप्ता विना १० तिर्यचगर्भज, पर्याप्ता अने अपर्याप्ता एम १० भेद

२०२ मनुष्य गर्भज पर्याप्ता अने अपर्याप्ता एम २०२ भेद देवताना १९८ भेद.

४२३ श्रुतज्ञाननी मार्गणा ए १३ नारकीना १० तीर्यंचना २०२मनुष्यना १९८देवताना सर्व ४२३भेद

२४६ अवधिज्ञान मार्गणा ए ३२ नारकीना ५ तिर्यंच गर्भज पर्याप्ताना १९८ देवताना ३०मनुष्यगर्भजना कर्मभूमीना १५पर्याप्ता १५अपर्याप्ता एम ३०

१५ मनपर्यवज्ञान मार्गणा ए १५ मनुष्यगर्भजना कर्मभुमी पर्याप्ता.

१५ केवलज्ञाननी मार्गणा ए १५गर्भजमनुष्य कर्म भुमीना पर्याप्ता.

५३५ मतिअज्ञान मार्गणा ए१४नरकना; ४८ तिर्यंचना ३०३ मनुष्यना १७० देवताना एम ९ लोकातिकना ५ अनुत्तर विमानना ए १४ पर्याप्ताअने अपर्याप्ता मिलकर २८विना १७० भेद लीना.

५३५ श्रुतअज्ञान मार्गणा ए मति अज्ञाननी परे जाणवा.

२२४ विभंग अज्ञान मार्गणा ए १४ नरकना १० तिर्यंचना ३० मनुष्यना १५ कर्म भुमिना पर्यासा अने अपर्यासा १७० देवताना ९ लोकांतिकना ५ अनुत्तरविमान १४ पर्यासा १४अपर्याप्ता मिलकर २८ विना १७० भेद.

१५ सामाइक चारीत्रने १५ कर्म भुमिना पर्यासा.

१० छेदोपस्थापनिक चारीत्रने १० मनुष्य ५ भरत ५ ऐरावत एम १० भेद.

१० परीहार विसुध चारीत्रने १० मनुष्यना उपर परमाने

१५ सुक्ष्म संपराय चारीत्रना १५ कर्म-भुमि मनुष्यना.

१५ यथाख्यात चरित्रना १५ मनुष्य कर्म भुमिना.

२० देशविरती चारीत्रना १५ कर्म भुमिना मनुष्य ५ तिर्यंच गर्भज पर्याप्ताना २० भेद.

५६३ अविरती चारीत्रना.

२१८ चक्षु दर्शन मार्गणा ए ७ नारकीना पर्यात्पा ११ तिर्यंचना ५ संज्ञी पंचेंद्री पर्यात्पाना ९ असंज्ञी पंचेंद्रीना पर्याप्ता १ चउरींद्री पर्याप्ता ना १०१ मनुष्य गर्भज पर्याप्ताना ९९ देवताना पर्याप्ताना एकंदर मिलकर २१८ भेद.

५६३ अचक्षु दर्शन मार्गणाने विषे.

२४६ अवधी दर्शन मार्गणा ए अवधीज्ञान नी परे जाणवो.

१५ केवलदर्शन मार्गणा ए कर्मभुमीनामनुष्य

४५९ कृष्ण लेश्यानीमार्गणाए ६नारकीना १पांचमी १ छठी १ सातमी एम ३ नरकना पर्याप्ता अने ३ अपर्याप्ताना एम ६ भेद ४८ तिर्यंचना ३०३ मनुष्यना १०२ देवताना १५ परमाधामी १० भु वनपतीना १६ वाणव्यंतरना १० तीर्यगज्रंभकना ५१ पर्याप्ता अने अपर्याप्ता मिलकर १०२ भेद.

४५९ नीललेश्या ए ६ नारकीना तीजी १

चोथी १ पांचमी १ एम ३ नरक पर्याप्ता अने अपर्याप्ता ६ भेद ४८ तिर्यंचना ३०३ मनुष्यना १०२ देवताना कृष्ण लेश्यानी परे.

४५९ कापोत लेश्या नी मार्गणा ए ६ नारकी ना १ पहेली १ बीजी १ त्रीजी एम ३ नारकी पर्याप्ता अपर्याप्ता ६ भेद ४८ तिर्यंचना ३०३ मनुष्यना १०२ देवताना कृष्णलेश्यानी परे जानवा.

३१३ तेजूलश्यानी मार्गणा ए १३ तिर्यंचना १०गर्भज तिर्यंचपर्याप्ता अने अपर्याप्ता२ पृथ्वीकाय १ अपकाय १ वनस्पती एम मिलकर १३ मनुष्य गर्भजना २०२ पर्याप्ता अने अपर्याप्ता, ९८ देवताना १० भुवन पती १६ वाणव्यंतर १० तिर्यगजृंभक १० जोतीषी १ किल्विषीयानो २ देवलोक एकंदर ४९ पर्याप्ता अने ४९ अपर्याप्ता ९८ भेद.

६६ पद्मलेश्यानी मार्गणा ए १० तिर्यंचना गर्भज पर्याप्ता अने अपर्याप्ता ३० मनुष्यना १५

कर्मजभूमिना पर्याप्ता अने अपर्याप्ता २६ देवताना त्रीजो, चौथुं, पांचमुं ३ किल्वीर्षीयानो अने ९ लोकांतिक एम १३ पर्याप्ता अने १३ अपर्याप्ता एम २६ भेद.

८४ शुक्ललेश्या नी मार्गणा ए १० तिर्यंचना ३० मनुष्यना ४४ देवताना १ छठुं १ सातमुं १ आठमुं १ नवमुं १ दशमुं १ ग्यारमुं १ बारमुं देवलोकना १ किल्वीषियानो ९ नवग्रैवेग ५ अनुत्तर विमान एम २२ पर्याप्ता अने २२ अपर्याप्ता मिलकर ४४ भेद.

५६३ भव्यनी मार्गणा ए सर्व ५६३ भेद.

५०५ अभव्यनी मार्गणा ए १५ परमाधामीना ९ लोकांतिक ना ५ अनुत्तर विमनना एम २९ पर्याप्ता अपर्याप्ता ५८ बिना ५०५ अने ९ लोकांतिकना ५ अनुत्तर विमानना एम १४ पर्याप्ता अने अपर्याप्ता २८ भेद बिनगणीये तो ५३५ भेद.

२०३ उपसमकित नी मार्गणा ए ७ नरकीना पर्याप्ता ना ५ तिर्यंचना गर्भज पर्याप्ताना १०१ मनुष्यना गर्भज पर्याप्ता ना ९० देवताना ९ लोकांतिक विना पर्याप्ता ना सर्वार्थसिद्धि नो १ नगणी ए तो २०२ भेद.

१६८ खाइक समकित नी मार्गणा ए ६ नारकीना पहीली, बीजी, त्रीजी, एम ३ पर्याप्ता ३ अपर्याप्ता ६ नारकीना २ तिर्यंचना थलचर पर्याप्ता अने अपर्याप्ता २ भेद.

९० मनुष्यना १५ कर्मभुमिना पर्याप्ता अने ३० अकर्म भुमिना एम ४५ पर्याप्ता अने अपर्याप्ता ९० भेद

७० देवताना १२ देवलोक ९ लोकांतिक ९ नवग्रैवेक ५ अनुत्तर विमानना एम ३५ पर्याप्ता अपर्याप्ता ७० भेद.

४२३ खयोप समाकितना मार्गणा ए १३नारकीना १० तिर्यंचना २०२मनुष्यना १९८देवताना.

१९८ मिश्रसमकितनी मार्गणा ७ नारकीना पर्याप्ता ८८ देवताना ९ लोकांतिक ५ अनुत्तर विमान एम १४ पर्याप्ताना विना ८५ देवताना ५ तिर्यंच पंचेद्री पर्याप्ताना १०१ मनुष्यना गर्भज पर्याप्ताना.

४०० सास्वादन समकितनी मार्गणा ए ७ नरकना पर्याप्ताना २१ तिर्यंच गतिना २ एकेंद्री अपर्याप्ताना १पृथ्वीकाय १आपकाय १ वनस्पती काय ३ पर्याप्ता ३विगलेंद्री अपर्याप्ताना ५ असन्नी अपर्याप्ताना १० संन्नी अपर्याप्ताना, पर्याप्ताना २०२ मनुष्यगतिना गर्भज पर्याप्ता अपर्याप्ताना १७०देवताना ९ लोकांतिकना ५ अनुत्तर विना विमानना एम १४ पर्याप्ता १४ अपर्याप्ता २८ १७० देवताना.

५३५ मिथ्यात्वनी मार्गणा ए ५६३ माहेथी ९ लोकांतिकना ५ अनुत्तर विमानना एम १४ पर्याप्ता १४ अपर्याप्ता २८ विना ५३५ भेद.

४२४ संनीनी मार्गणा ए ५६३ माथी २२ एकेंद्रीना ६ विगलेंद्रीना १० असन्नी तिर्यंच पंचेद्रीना एम ३८ समुर्छिम १०१ मनुष्यना एम १३९ विना ४२४ भेद.

१३९ असन्नीनी मार्गणा ए २२ एकेंद्रीना ६ विगलेंद्रीना १० तिर्यंच पचेद्री समुर्छिमना १०१ मनुष्य समुर्छिमना एम १३९ भेद.

५६३ आहारनी मार्गणा ए सर्व.

३४७ अणाहीरानी मार्गणा ए ७ नारकीना अपर्याप्ताना २४ तिर्यंचना सर्व अपर्याप्ताना २१७ मनुष्यना एम १०१ समुर्छिमना १०१ गर्भज अपर्याप्ता १५ कर्म भुमिना पर्याप्ता एम २१७ भेद ९९ देवताना अपर्याप्ताना एम सर्व ३४७ भेद.

द्विसंयोगी भांगा.		त्रिसंयोगी भांगा		
१ उपसम	क्षायक	११ उपसम	क्षायक	क्षीपसम
२ उयसम	क्षोपसम	१२ उपसम	क्षायक	उदीक
३ उपसम	उदीकि	१३ उपसम	क्षायक	परिणामिक
४ उयसम	परिनामीक	१४ उपसम	क्षोपसम	उदीक
५ क्षायक	क्षोपसम	१५ उपसम	क्षोपसम	परिणामिक
६ क्षायक	उदीक	१६ उपसम	उदीक	परिणामिक
७ क्षायक	परिणामिक	१७ क्षायक	क्षोपसम	उदीक
८ क्षोपसम	उदीक	१८ क्षायक	क्षोपसम	परिणामिक
९ क्षोपसम	परिगामिक	१९ क्षायक	उदीक	परिणामिक
१० उदीक	परिणामिक	२० क्षोपसम	उदीक	परिणामिक

चतुर्थ संयोगी भागा			
२१ उपसम	क्षायक	क्षोपसम	उदीक
२२ उपसम	क्षायक	क्षोपसम	परिणामिक
२३ उपसम	क्षायक	उदीकि	परिणामिक
२४ उपसम	क्षोपसम	उदीक	परिणामिक
२५ क्षायक	क्षोपसम	उदीक	परिणामिक

पंच संयोगी भांगा.

२६ उपसम	क्षायक	क्षोपसम	उदीक	परिणामिक सर्व २६

बांसठ मार्गणा ऊपर त्रेपन भाव

मार्गणा ६२	उपसम २	क्षयक ९	क्षयकउपसम १८	उदीरत २१	परिणामिक ३	सर्वभाव ५३
१ देवगती	१	१	१५	१७	३	३७
२ मानवगती	[illegible]	०	१८	१८	३	५०
३ तिर्मंचगती	१	१	१६	१८	३	३९
४ नारकगती	१	१	१५	१३	३	३३
५ एकेंद्रीजाति	०	०	८	१४	३	२५
६ बेइंद्रीजाति	०	०	८	१३	३	२४
७ तेइंद्रीजाति	०	०	८	१३	३	२४

८ चोरेंद्रीजाति		०	९	१२	३	२५
९ पंचेंद्री	२	९	१८	२१	३	५३
१० पृथ्वीकाय	०	०	८	१४	३	२५
११ अपकाय	०	०	८	१४	३	२५
१२ तेउकाय	०	०	८	१३	३	२४
१३ वउकाय	०	०	८	१३	३	२४
१४ वनस्पती	०	०	८	१४	३	२५
१५ त्रसकाय	२	९	१८	२१	३	५३
१६ मनोयोग	२	९	१८	२१	३	५३
१७ वचनयोग	२	९	१८	२१	३	५३
१८ काययोग	२	९	१८	२१	३	५३
१९ स्त्रीवेद	२	९	१८	२१	३	५३
२० पुरुषवेद	२	१	१८	१८	३	४२
२१ नपुंसकवेद	२	१	१८	१८	३	४२
२२ क्रोध	२	१	१८	१८	३	४२

२३ मान	२	१	१८	१८	३	४२
२४ माया	२	१	१८	१८	३	४२
२५ लोभ	२	१	१८	१८	३	४२
२६ मतीज्ञान	२	२	१५	१९	३	४०
२७ श्रुतज्ञान	२	२	१५	१९	३	४०
२८ अवधिज्ञान	२	२	१५	१९	३	४०
२९ मनपर्यव,,	२	२	१४	१५	२	३५
३० केवल ,,	०	९	०	३	१	१२
३१ मातिअज्ञान	०	०	१०	२१	३	३४
३२ श्रुत ,,	०	०	१०	२१	३	३४
३३ विभग ,,	०	०	१०	२१	३	३४
३४ सामायक-चारित्र	२	१	१४	१५	२	३४
३५ छेदोपस्था	२	१	१४	१५	२	३४
३६ परिहार विशुद्धी	१	१	१४	१४	२	३२

३७ सुक्ष्मसंपराय	१	१३	४	२	२२
३८ यथाख्यात २	०.	१२	३	२	२८
३९ देशविरती १	१	१३	१७	३	३५
४० असंयम १	१	१५	२१	३	४१
४१ चक्षुदर्शन २	२	१८	२१	३	४६
४२अचक्षुदर्शन२	२	१८	२१	३	४६
४३ अवधिदर्शन२	२	१५	१९	२	४०
४४ केवल ,, ०	९	०	३	१	१३
४५ कृष्णलेश्या१	१	१८	१६	३	३९
४६ निल ,, १	१	१८	१६	३	३९
४७ कापोत,, १	१	१८	१६	३	३९
४८ तेजो ,, १	१	१८	१५	३	३८
४९ पद्म ,, १	१	१८	१५	३	३८
५० शुक्ल ,, २	९	१८	१५	३	४७
५१ भव्य २	९	१८	२१	२	५२

५२ अभव्य ०	०	१०	२१	२	३३
५३ क्षायकउप ०	०	१५	१९	२	३६
५४ उपसमिक २	०	१४	१९	२	३७
५५ क्षायक १	९	१४	१९	२	४५
५६ मिश्रसम ०	०	१४	१९	२	३५
५७ मिथ्यासम०	०	१०	२१	३	३४
५८ सास्वादन ०	०	१०	२०	२	३२
५९ सज्ञी २	९	१८	२१	२	५३
६० असज्ञी ०	०	९	१५	३	२७
६१ आहारक २	९	१८	२१	३	५३
६२ अणाहारक १	९	१५	२१	३	४९
६३ मिथ्यात्व ० गुणठाणा	०	१०	२१	३	२
६४ सास्वाद ,,०	०	१०	२०	३	३३
६५ मिश्र ,,०	०	१२	१९	२	३३
६६ अविरती ,,१	१	१२	१९	२	३५

६७ देसविरती,१	१	१३	१७	२	३४
६८ प्रमथ ,,१	१	१४	१५	२	३३
६९ अप्रमथ ,,१	१	१४	१२	२	३०
७० अपूर्वकरण,१	१	१३	१०	२	२७
७१ अनिव्रत्ति,,२	१	१३	१०	२	२८
७२सुक्ष्मसंवरा,२	१	१३	४	२	२२
७३उपशांतमो,२	१	१२	३	२	२०
७४ खीणमोह,०	२	१२	३	२	१९
७५ संयोगी ,,०	९	०	३	१	१३
७६ अयोगि ,,०	९	०	२	१	१२

सम्पूर्ण थयो.

तेराठ

पाचसो त्रेपन जीवना भेद द्विप क्षेत्र आसरी.

१	क्षेत्र	नकना १४भे	तिर्यंचना ४८भेद	मनुष्यना ३०३भेद	देवतना १९८भेद	सर्वसंख्या ५६३
१	भारतमें	०	४८	३कर्मभूमी	०	५१
२	ऐरावतमें	०	४८	३	०	५१
३	महाविदेहमें	०	४८	३	०	५१
४	जंबुद्विपमें	०	४८	२७ कु ३ क ग प अ ५ ९ प क स	०	७५
५	लवणसमुद्रमें	०	४८	१६८ ५६ अंतरद्वीप प अ स	०	२१६
६	धातकीखंडमें	०	४८	५४ कु ६ क ग प अ स १८ प अ स	०	१०२
७	कालोदधिस	०	४८	०	०	४८
८	आधोपुष्करा वरत द्विपमें	०	४८	५४ कु ६ क ग प अ स १८ प अ स	०	१०२
९	नंदीश्वरद्विप प्रमुखमें	०	४६ बादरते उकायटली	०	०	४६
१०	तिर्यंलोकमें	०	४८	३०३	७२ दे १६ स प १० ज पा १० ज्योदय प अ	४२३
११	अधलोकमें	१४	४८	३ [illegible] प अ ज	५० कु १५ प १० गु प अ	११०

२	क्षेत्र	*नर्कना २४भेद	तिर्यंचना ४८भेद	मनुष्यना ३०भेद	देवताना १९८भेद	सर्वमं. ५६३
१२	उर्धलोकमें	०	४६थलचर वे नथी	०	७६देव१२दे० ३कि.९ग्रै.९ लो.प.अ.५ अनुत्तरविमान	१२२
१३	मेरुगिरपर्वत	०	४८	०	०	४८
१४	अढाईद्विपमें	०	४८	३०३	०	३५१
१५	बार देवलोकमें	०	२० तेउकाय टाली	०	४८दे.१२ दे.९लो.३ कि.प.अ.	६८
१६	नव ग्रैविकमें	०	१४कु.५सु.प.अ.२ बाद.प.अ.२पृथवी वाउ प. अ.	०	१८दे९ग्रै. प.अ.	३२
१७	लोकनेछहडे	०	१२ती.१०सु.प.अ. २बा.प.अ.पृथवी	०	०	१२
१८	आधो गांवमें	०	४८	३	०	५१
१९	मुह्रीमे	०	४	०	०	४
२०	नंदीश्वर समुद्र प्रमुखमें	०	४६ तेउ वाउर टाली	०	०	४६

पेला आराना जुगलियानुं ३ पल्योपमनुं आयुष्य ३ कोसनुं शरीर चोथे दिवसे तुवर प्रमाणें अहार करे ५५६ पांसली ४९ दिवस प्रति पालणाकरे बीजे आरे २ पल्योपमनुंआयुष्य २ कोसनुं शरीर त्रीजे दिवसे बोर प्रमाणे अहार करे १२७ पांसली ६४ दिवस प्रतिपालणा करे.

त्रीजा आरना युगलियानुं एक पल्योपमनु आयुष्य १ कोसनु शरीर एकांतरे आमला जेटलोअहार करे ६४पासली ७९ दिवस प्रतिपालणाकरे

३	अनामना भेद५६०	धर्मास्तिकाय अधर्मास्ति १६	आकास्ति काय ८	कालास्तिका य ६	पुद्गलास्ति काय५३०	सबत ध्या भेद
२१	मनुतक्षेत्र	१४सधटाल्यो	७खध टाल्यो	कालनाद्भेद माथी१टाल्यो	५३०	५५७
२२	जबुद्विप	१४सधटाल्यो	७खध टाल्यो	कालनाद्भेद माथी१टाल्यो	५३०	५५७
२३	लवण समुद्र	१४सधटाल्यो	७खध टाल्यो	कालनाद्भेद माथी१टाल्यो	५३०	५५७
२४	नंदीश्वर द्विप	१४सधटाल्यो	७खध टाल्यो	०	५३०	५५१

जीवना चउदा भेद ऊपर गुणठाणा, योग, उपयोग, लेश्या, बंध, उदय, उदीरण, सत्ता

जीवना १४ भेद	गुण	योग	उपयोग	लेश्या	बंध	उदे	उदीरणा	सत्ता.
१४ सज्ञीपचंद्री पर्याप्ता	१४	१५	१२	६	७८	८७	४८	७८२
					६१	४	६५२	०
१३ सज्ञीपचेंद्री अ प	३	३	८	६	७८	८	७८	८

जीवना १४ भेद.	गुण.	योग.	उपयोग.	लेश्या.	बंध	उदे.	उदीरतो.	सत्ता.
१२ असन्नीपंचेंद्रीपर्यासा.	१	२	४	३	·७८	८	७८	८
११ असन्नीपंचेंद्री अ. प.	२	२३	३	३	७८	८	७८	८
१० चौरिंद्री पर्यासा.	१	२	३	३	७८	८	७८	८
९ चौरिंद्री अ. प.	२	२३	३	३	७८	८	७८	८
८ तेइंद्री प.	१	२	३	३	७८	८	७८	८
७ तेइंद्री अ. प.	२	२३	३	३	७८	८	७८	८
६ वेइंद्री प.	१	२	३	३	७८	८	७८	८
५ वेइंद्री अ. प.	२	२३	३	३	७८	८	७८	८
४ वादर एकेंद्री प.	१	३	३	३	७८	८	७८	८
३ वादर एकेंद्री अ.प.	२	२३	३	४	७८	८	७८	८
२ सुक्षम एकेंद्री प.	१	१	२	२	७८	८	७८	८
२ सुक्षम एकेंद्री अ.प.	१	२३	३	३	७८	८	७८	८

शेस कूट नी गीनती.

पांच भरत अने पांच ऐरावत ए दस क्षेत्रनी तीस चोवीसी तेना सातसेने वीस प्रतिमा थयी पांच महाविदेह क्षेत्रनी पांच बत्रीसी तेना एकसौने साठ प्रीतीमा थई एकसोने वीस कल्याणक बीस वेरमान चार सास्वता सर्वे मलीने एकहजारने चोवीस प्रतिमा थई.

चारासिलाख जीवाजोनीना प्राण, पर्याप्ती, इन्द्री

चोरासी लाख जीवाजोनीनी इन्द्री दोक्रोड पृथ्वीकाय सातलाखअपकाय सातलाखतेउसकाय सातलाखवाउकाय दसलाख प्रत्येकवनसपतीकाय चउदालाख साधारणवनस्पतीकाय ए बावनलाख एकेन्द्रीनीथई बेइंद्रीनी चार लाख तेइंद्रीनी छे लाख चौरिंद्रीनी आठलाख त्रणविकलेंद्रीनीअढारा लाख इन्द्री थई देवतानी वीसलाख नारकीनी वीस लाख तिर्यचपंचेंद्रीनीवीसलाख मनुष्यनीसत्तरलाख सर्वे मिली बे क्रोड इन्द्री थई

चौरासी लाख जीवा जोनीना प्राण५ क्रोड १० लाख बावनलाख एकेंद्रीना ४ प्राण तेने चार गुणा करता २ क्रोड आठ लाख प्राण थया बेइंद्रीना बारालाख तेइंद्रीना चउदलाख प्राण थया चौरिंद्रीना सोलालाख प्राणथया त्रण विकलेंद्रीना बेतालीस लाख प्राण थया देवताना चालीसलाख नारकीना चालीस लाख तीर्यंचपचेंद्रीना चालीस

लाख मनुष्यना एक क्रोड चालीस लाख सर्वना भेगा करता पांच क्रोड दस लाख प्राण थया.

३ क्रोड ९४ लाख ॥ चौरासी लाख जीवा-जोनीनी पर्याप्ती ॥ बावन लाख एकेंद्रीनी चार पर्याप्ती तेने चार गुणा करता बे क्रोड आठ लाख पर्याप्ती थई बेइंद्रिने दसलाख तेइंद्रीने दस लाख चोरिंद्रीने दस लाख त्रण विकलेंद्रीने तीस लाख पर्याप्ती थई देवतानी २४ लाख नारकीनी चोवीस लाख तीर्यंच पंचेंद्रीनी चोवीस लाख मनुष्यनी चोवीस लाख पर्याप्ती सर्वे भेगीकरता ३ क्रोड चोराणु लाख पर्याप्ती थई.

समाप्त.